Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 19

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

13 रमाज़न 1441 हिजरी कमरी 7 हिजरत 1399 हिजरी शमसी 7 मई 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

हाकिम के लिए धर्म का एक हिस्सा यह है कि वे मुक़द्दमों में अच्छी तरह ग़ौर करे ताकि किसी का हक़ मारा न जाए। मुत्तक़ी ख़ुदा की तरफ़ जाता है और दुनिया उस के पीछे ख़ुद अपने आप आती है, पर दुनियादार दुनिया के लिए दुख और तकलीफ़ उठाता है फिर भी उसे दुनिया से आराम नहीं मिलता। देखो सहाबा ने दुनिया को तर्क किया और वे दुनिया में भी बड़े मालदार हुए और परलोक का भी फल खाया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

जनवरी 1898 ई

अदालतों का ज़िक्र और अदालतों में गवाहों का वकीलों और हुक्काम के रोब में आ जाने का कुछ वर्णन हो रहा था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :अदालतों में प्राय गवाहों पर हाकिमों और वकीलों का ऐसा रोब पड़ जाता है कि वे इन्सानों के हुक़ूक़ को सुरक्षित नहीं रख सकते और कुछ न कुछ व्यर्थ और ग़लत बात मुँह से निकाल देते हैं जिस से ज़ुल्म पैदा होता है। अदालतों का रोब भी एक शिर्क है। اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ

फ़रमाया : कुछ अंग्रेज़ मुक़द्दमों के फ़ैसला करने में बहुत छानबीन करते और ग़ौर से सोच विचार कर फ़ैसला करते हैं। क़ुदरत की बात है कि मैं मिर्ज़ा साहिब (पिता जी)के वक़्त में ज़मीनदारों के साथ एक मुक़द्दमा पर अमृतसर में कमिशनर की अदालत में था। फ़ैसला से एक दिन पहले कमिशनर ज़मीनदारों की निहायत रियाइत करता हुआ और उनकी शरारतों की परवाह न कर के अदालत में कहता था कि ये ग़रीब लोग हैं तुम उन पर ज़ुल्म करते हो। इस रात को मैंने ख़वाब में देखा कि वह अंग्रेज़ एक छोटे से बच्चा की शक्ल में मेरे पास खड़ा है और मैं इस के सिर पर हाथ फेर रहा हूँ। सुब्ह को जब हम अदालत में गए तो इस की हालत ऐसी बदली हुई थी कि मानो वह पहला अंग्रेज़ ही न था। उसने ज़मीनदारों को बहुत ही डाँटा और मुक़द्दमा हमारे हक़ में फ़ैसला किया और हमारा सारा ख़र्चा भी उन से दिलाया।

फ़रमाया: हाकिम के लिए धर्म का एक हिस्सा यह है कि वे मुक़द्दमों में अच्छी तरह ग़ौर करे ताकि किसी का हक़ मारा न जाए।

फ़रमाया: देखो जब तक इन्सान दृढ़ निश्चय और ठंडी तबीयत का न हो तो उन ज़मीनी हाकिमों के सामने खड़ा होना मुश्किल होता है तो क्या हाल होगा उस वक़्त जब कि अहकमुल हाकिमीन (सब से अधिक सच्चा फैसला करने वाले) के सामने खड़े किए जाएंगे।

फ़रमाया: तौरात की दृष्टि से जो ज़ना का नुतफ़ा हो वह मलऊन होता है और जो सलीब दिया जाए वह भी मलऊन होता है। आश्चर्य कि ईसाईयों ने अपनी नजात के लिए कफ़्फ़ारा का मस्ला घड़ने के लिए यह स्वीकार कर लिया कि यसू सलीब पर जा कर मलऊन हो गया। जब एक लानत को उन्होंने यसू के लिए उचित रखा है तो फिर दूसरी लानत को भी क्यों जायज़ नहीं रख लेते ताकि कफ़्फ़ारा ज़्यादा पुख़्ता हो जाए। जब लानत का शब्द आ गया तो फिर क्या एक और क्या दो मगर क़ुरआन शरीफ़ ने इन दोनों लानतों का रद्द किया है और दोनों का जवाब दिया है कि उनका जन्म भी पवित्र था और उनका मरना आम लोगों की तरह था, सलीब पर न था।

फ़रमाया: मुत्तक़ी ख़ुदा की तरफ़ जाता है और दुनिया उस के पीछे ख़ुद अपने आप आती है, पर दुनियादार दुनिया के लिए दुख और तकलीफ़ उठाता है फिर भी उसे दुनिया से आराम नहीं मिलता। देखो सहाबा ने दुनिया को तर्क किया और वे दुनिया में भी बड़े मालदार हुए और परलोक का भी फल खाया।

सच्चे और झूठे की पहचान

सवाल हुआ कि कुछ विरोधी भी इल्हामों का दावा करते हैं तो सच्चे और झूठे में क्या शनाख़्त हुई?

फ़रमाया। यह बहुत आसान है वे हमारे मुक़ाबला में आकर यह दावा प्रकाशित करें कि अगर हम सच्चे हैं तो हमारा विरोधी हम से पहले मर जाएगा। तो हमें दृढ़ यक़ीन ख़ुदा तआला की तरफ़ से दिया गया है कि अगर एक दस वर्ष का बच्चा जिसके लिए ज़िन्दगी के तमाम सामान मौजूद हूँ और बहुत हिस्सा उस की उम्र का बाक़ी होए यह दावा कर के हमारे ख़िलाफ़ खड़ा हो जाएगा तो अल्लाह तआला उसे हम से पहले मौत देगा।

15 जनवरी 1898 ई

शीया मज़हब के अक़ीदे

फ़रमाया। शीया मज़हब इस्लाम का सख़्त विरोधी है। प्रथम शीया की आस्था है कि जिब्राईल वह्य लाने में ग़लती खा गया है। द्वितीय सहाबा रज़ि जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआओं के बाद हासिल हुए थे उनके नज़दीक अल्लाह की पनाह मुसलमान न थे। तृतीय क़ुरआन शरीफ़ जो अल्लाह तआला की पवित्र किताब है और जिसकी हिफ़ाज़त का ख़ुद अल्लाह तआला वादा कर चुका है। शीया की आस्था के अनुसार क़ुरआन शरीफ़ असली नहीं है। इमाम महदी असल क़ुरआन ग़ार में ले जाकर छप रहे। चतुर्थ 12 इमामों तक वलायत ख़त्म हो चुकी ,बाक़ी क़यामत तक आदमी वहशियों की तरह रहे और ख़ुदा तआला को उनसे मुहब्बत नहीं। पंचम ख़ुदा तआला के हबीब आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ि को गालियां देना दरूद शरीफ़ के पढ़ने से भी ज़्यादा सवाब समझते हैं। षष्ठम किसी धर्म के बुज़ुर्ग और अल्लाह के वली को नेक नहीं समझते। मैंने अपने उस्ताद से हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी के बारे में सुना है कि वह गालियां देते थे। असल बात यह है कि सबसे ज़्यादा बदनाम यज़ीद है। अगर उस की शराकत से इमाम हुसैन रज़ि की शहादत हुई तो बुरा किया, लेकिन आजकल के शीया भी मिलकर वह धार्मिक काम नहीं कर सकते जो उसने किया।

अहले किताब का खाना

अहले किताब का खाना खाने पर बाबू मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब के सवाल पर हज़रत अक़्दस ने जवाब दिया कि सभ्याचारिक तौर पर हिंदूओं की चीज़ भी खा लेते हैं। इसी तरह ईसाईयों का खाना भी दरुस्त है मगर हां यह विचार ज़रूरी है कि बर्तन साफ हों,कोई नापाक चीज़ ना हो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 131 प्रकाशन 2018 ई कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-2)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब एक बजकर बीस मिनट तक जारी रहा। आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई

अमन का ख़लीफ़ा हॉलैंड तशरीफ़ लाया है। (अख़बार Ons Almere)

मुझे ख़लीफ़ा की सबसे अच्छी बात ये लगी कि उन्होंने इन्सानी अधिकार पर बात की और लोगों को अमन और सलामती की तरफ़ बुलाया एक मेहमान Erik Jan Kli JN साहिब

मुझे ख़लीफ़ा की सबसे अच्छी बात यह लगी कि उन्होंने बहुत साहस से बात की है

पोप प्राय अमन की बात करता है मगर आपके ख़लीफ़ा ने स्पष्ट रूप से ताक़तवर क़ौमों को सम्बोधित करके बात की है

मेहमान Herman Mee Ter साहिब।

जमाअत का रहनुमा अच्छा है इसलिए जमाअत भी अच्छी है, मुझे हुज़ूर का ख़िताब बहुत अच्छा लगा।

ख़लीफ़ा वक़्त ने हर बात बहुत स्पष्ट और खुल कर की, ख़लीफ़ा ने जो बातें भी कीं वे वक़्त की ज़रूरत के ठीक अनुसार थीं

(एक औरत Christna साहिबा)

जलसा में सब लोग बहुत ही अच्छे आचरण वाले थे,एक जन्नत तुल्य माहौल था, ख़लीफ़ा का ख़िताब बहुत पर प्रभावित करने वाला था

(एक डच मियां बीवी Fatih और Gisele)

आपको देखकर और सुन कर बहुत ताक़त मिलती है और आप सारी झरती पर सबसे अधिक अम्न पसंद शख़्सियत हैं।

आप इतने बड़े लीडर हैं लेकिन फिर भी बड़े आसान शब्द में आम लोगों से उनकी समझ के अनुसार करते हैं।

मेरी इच्छा है कि दुनिया के अन्य रहनुमा भी आपसे सबक़ सीखें,मैं समझती हूँ कि आप दुनिया के बहुत से लीडर्ज़ के लिए अनुकरण योग्य नमूना हैं

एक मेहमान Annie Sels साहिबा

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ख़िताब सुनने के बाद मेहमानों के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं

अमन का ख़लीफ़ा हॉलैंड तशरीफ़ लाया है, ख़लीफ़तुल मसीह पूरी दुनिया में इन्सानों की और मानव जाति की सेवा कर रहे हैं

अमन और धार्मिक रवादारी को बढ़ावा दे रहे हैं, ख़लीफ़ा वक़्त ने दुनिया के अन्य पार्लीमैंट के अतिरिक्त डच पार्लीमैंट में भी ख़िताब किया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के हॉलैंड आने पर अख़बार 'Ons Almere की ख़बर

हम अच्छी तरह सोच समझ कर इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि यह सिलसिला अल्लाह तआला का स्थापित किया हुआ है और इस नूर को फैलाने का ज़िम्मा अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने ज़िम्मा लिया है और फैला रहा है चाहे विरोधियों जितनी भी कोशिश कर लें।

अब कोई नहीं जो इस तरक़्क़ी को रोक सके, यह सिलसिला फलना है और फूलना है और फैलना है,इंशा अल्लाह , यह ख़ुदा तआला का अटल फ़ैसला है जो पूरा हो कर रहेगा

हुज़ूर पर नूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का जलसा सालाना हॉलैंड से समापन ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

28 सितम्बर 2019 ई दिनांक हफ़्ता (बाक़ी रिपोर्ट)

ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों के साथ प्रोग्राम सात बजे तक जारी रहा। इस के बाद जब हुज़ूर अनवर मार्की से बाहर पधारे तो एवरीकोस्ट से आने वाले एक अहमदी नौजवान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से हाथ मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। महोदय Idrissa Kone एवरीकोस्ट से Pilot की पढ़ाई और ट्रेनिंग के लिए एक साल के लिए बेल्जियम आए हुए हैं। हुज़ूर अनवर ने महोदय से पूछा कि किस एयर लाईन के लिए काम करते हैं। जिस पर महोदय ने निवेदन किया Air Cote D'Ivore के लिए काम करते हैं। हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदय ने बताया कि वह अफ़्रीक़ा के देशों में जहाज़ चलाते हैं

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या आप पैदाइशी अहमदी हैं। जिस पर महोदय ने निवेदन किया कि उन्होंने कुछ साल पहले बैअत की थी। महोदय ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ की दरख़ास्त की। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला आप का भला करे।

इस के बाद महोदय ने बताया कि उन्हें जो पायलट बनने के लिए चुना गया है वो हुज़ूर अनवर की दुआओं के कारण ही है। घटना इस तरह हुई कि वह कुछ साल पहले जब जलसा सालाना एवरीकोस्ट में शामिल हुए तो वहां उनके दोस्त ने उन से कहा कि मैंने एक इश्तिहार देखा है कि Air Ivory Coast लोगों को अपनी सर्विस में लेने के लिए एक मुक़ाबला करवा रही है। लेकिन फाईल जमा करवाने की तारीख़ गुज़र गई है। महोदय बताते हैं कि बावजूद उस के कि तारीख़ गुज़र गई थी, मैंने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ के लिए लिखा और साथ ही अपनी फाईल जमा करवा दी। कुछ दिनों बाद उनको जवाब मिला कि यद्यपि आपने फाईल देरी से जमा करवाई है लेकिन हम आपको इजाज़त देते हैं कि आप इस मुक़ाबला में भाग लें।

इस के बाद उन्होंने इस मुक़ाबला के लिए लिखित परीक्षा दी और एक हज़ार उम्मीदवारों में से सिर्फ पंद्रह उम्मीदवार चुने गए हुए जिन में उनका नाम भी शामिल था। महोदय ने कहा यह सब कुछ हुज़ूर अनवर की दुआओं के कारण हुआ। महोदय कहने लगे कि मैंने हुज़ूर अनवर को MTA पर देखा था। आज ज़िन्दगी में पहली बार अपनी आँखों से अपने बहुत क़रीब देखा है और हुज़ूर अनवर से बातें की हैं। हुज़ूर अनवर ने काफ़ी देर तक मेरा हाथ पकड़े रखा। आज मैं बहुत अधिक ख़ुशनसीब इन्सान हूँ, मैं अपनी ज़िन्दगी में इन लम्हों को कभी भुला नहीं सकता। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए और दफ़्तरी डाक, ख़ुतूत और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायतों से नवाज़ा।

8 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ले जा कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

हुज़ूर अनवर का ख़िताब सुनकर मेहमानों के प्रतिक्रियाएं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के आज के ख़िताब ने ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर जमाअत मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा और कुछ मेहमान अपने भावनाओं और प्रतिक्रियाएं का इज़हार किए बिना ना रह सके

एक मेहमान Gert Van Den Berg जो कि ननस्पैट के कौंसिलर हैं, ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: बहुत समय पहले मैं यहां आने को पसंद भी नहीं करता था। मगर अब हमारे सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं। मैंने ख़लीफ़ा का नन

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जंग उहद के अवसर पर....सैंकड़ों तीर अंदाज़ों ने कमानें उठा लें और अपने तीरों का निशाना रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह को बिना लिया ताकि तीरों की बौछाड़ से इस को छेद डालें। इस वक़्त वह शख़्स जिसने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे मुबारक की सुरक्षा के लिए अपने आपको खड़ा क्या वह तलहा रज़ि था जंग जमल में हज़रत तलहा रज़ि ने मृत्यु की अन्तिम अवस्था में हज़रत अली रज़ि के लश्कर में से एक व्यक्ति के हाथ पर हज़रत अली रज़ि की बैअत कर ली थी।

जंग जमल के कारण, हालात एवं घटनाएं और इस के बारे में उठने वाले कुछ सवालों के तसल्ली वाले उत्तर

जंग जमल में सहाबा रज़ि का हरगिज़ कोई दख़ल न था बल्कि यह शरारत भी क़ातिलाने उस्मान रज़ि की ही थी।

कोरोना वाइरस के कारण से पैदा होने वाले वर्तमान हंगामी हालात में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक उद्धरण के हवाले से घरों को साफ़ रखने इसी तरह हुकूमत की तरफ़ से दी जाने वाली हिदायतों की पाबंदी करने की नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 3 अप्रैल 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आजकल के हालात के अनुसार और जो क़ानून यहां की हुकूमत ने बनाया है इस के अनुसार बाक़ायदा लोगों को सामने बिठा के कि मुक़तदी सामने बैठे हों, सुनने वाले सामने बैठे हों ख़ुत्बा नहीं दिया जा सकता और क़ानून की सीमा में रहते हुए ही जितनी, जिस सीमा तक इजाज़त है इस के अनुसार आज यहां प्रबन्ध किया गया है कि मस्जिद से ही मैं ख़ुत्बा दूं क्योंकि दुनिया में बहरहाल इस समय ख़ुत्बा सुनने वाले हज़ारों लाखों हैं चाहे मस्जिद में मेरे सामने इस वक़्त कोई हो या न हो। एकता स्थापित रखने की यह कोशिश हमें हमेशा करनी चाहिए और दुआ भी करते रहना चाहिए। अल्लाह तआला हालात भी बेहतर करे। इस महामारी को भी दूर करे और फिर दोबारा इसी तरह मस्जिद की रौनक़ें वापस भी आ जाएं।

अब मैं ख़ुत्बे का जो विषय है इस को शुरू करता हूँ। हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि का ज़िक्र दो जुम्अः पहले के ख़ुत्बे में वर्णन हुआ था या हो रहा था। उनकी शहादत जो जंग जमल में हुई थी उस के हवाले से मैंने कहा था कि भविष्य में वर्णन करूँगा। अतः आज इस बारे में बताऊँगा। इस में जंग जमल के बारे में उठने वाले कुछ सवाल हैं उनके भी कुछ सीमा तक जवाब मिल जाते हैं

हज़रत उमर रज़ि ने अपने देहान्त से पहले ख़िलाफ़त के बारे में एक कमेटी बनाई थी। इस हवाले से सही बुख़ारी की एक रिवायत में यह विस्तार लिखा गई है कि जब हज़रत उम्र रज़ि की वफ़ात का वक़्त क़रीब था तो लोगों ने कहा अमीरुल मोमनीन वसीयत कर दें। किसी को ख़लीफ़ा निर्धारित कर जाएं। उन्होंने फ़रमाया में इस ख़िलाफ़त का हक़दार उन कुछ लोगों से बढ़कर और किसी को नहीं पाता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसी हालत में फ़ौत हुए कि आप उनसे राज़ी थे और उन्होंने अर्थात हज़रत उमर रज़ि ने फिर हज़रत अली रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत ज़ुबैर रज़ि, हज़रत तलहा रज़ि, और हज़रत सअद रज़ि और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि का नाम लिया और कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि तुम्हारे साथ शरीक रहेगा लेकिन इस ख़िलाफ़त में इस का कोई हक़ नहीं है। मानो यह बात अब्दुल्लाह को तसल्ली देने के लिए कही है। अगर ख़िलाफ़त सअद को मिल गई तो फिर वही ख़लीफ़ा हो। वर्ना जो भी तुम में से अमीर बनाया जाए वह सअद से मदद लेता रहे क्योंकि मैंने उस को इसलिए स्थगित नहीं किया कि वह किसी काम के करने से असमर्थ थे और न इसलिए कि कोई ख़यानत की थी। इसी तरह फ़रमाया मैं इस ख़लीफ़ा को जो मेरे बाद होगा पहले मुहाजरीन के बारे में वसीयत करता हूँ कि वह उनके हुक़ूक़ उनके लिए अदा करें और उनकी इज़्ज़त का ख़्याल रखें। और मैं अन्सार के बारे में भी उम्दा सुलूक करने की वसीयत करता हूँ कि उन्होंने मुहाजरीन से पहले अपने घरों में ईमान को जगह दी। जो उनमें से काम करने वाला हो उसे स्वीकार किया जाए। और मैं सारे शहर के निवासियों के साथ उम्दा सुलूक करने की इस को वसीयत करता हूँ क्योंकि वे इस्लाम के सुरक्षा करने वाले हैं और माल के मुहसिल हैं और दुश्मन के कुढ़ने का कारण हैं। और यह कि उनकी रजामंदी से उनसे वही लिया जाए जो उनकी जरूरतों से बच जाए। और मैं इस को बदवी अरबों के साथ नेक सुलूक करने की वसीयत करता हूँ क्योंकि वे अरबों की जड़ हैं और इस्लाम का माद्दा हैं और यह कि उनके ऐसे मालों से लिया जाए जो उनके काम के न हूँ। और फिर उन्हीं के मुहताजों को दे दिया जाए। और में इस को अल्लाह के ज़िम्मे और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़िम्मे करता हूँ। जिन लोगों से अहद लिया गया हो इन का अहद उनके लिए पूरा किया जाए और उनकी हिफ़ाज़त के लिए उनसे सुरक्षा की जाए और उनसे भी इतना ही लिया जाए जितना उनकी ताक़त हो।

जब आप फ़ौत हो गए तो हम उनको लेकर निकले और पैदल चलने लगे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि ने हज़रत आयशा रज़ि को अस्सलामो अलैकुम कहा और कहा उम्र बिन ख़ताब रज़ि इजाज़त मांगते हैं। उन्होंने कहा कि उनको अंदर ले आओ। अतः उनको अंदर ले गए और वहां उनके दोनों साथियों के साथ रख दिए गए। जब उनकी तदफ़ीन से फ़ारिग़ हुए तो वे आदमी जमा हुए जिनका नाम हज़रत उमर रज़ि ने लिया था। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि ने कहा अपना मामला अपने में से तीन आदमियों के सपुर्द कर दो। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने कहा मैंने अपना अधिकार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि को दिया। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने हज़रत अली रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि से कहा आप दोनों में से जो भी इस मामला से हट जाऐंग हम इसी के हवाले इस मामला को कर देंगे और अल्लाह और इस्लाम उस का निगरान हों। और वह उनमें से उसी को चुन लेगा जो उस के निकट उत्तम है अर्थात अल्लाह तआला के निकट उत्तम है। इस बात ने दोनों बुज़ुर्गों को ख़ामोश कर दिया अर्थात उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने कहा क्या आप इस मामला को मेरे सपुर्द करते हैं और अल्लाह मेरा निगरान है कि जो आप में से उत्तम है इस को चुनने के बारे में कोई भी कमी नहीं करूँगा। इन दोनों ने कहा अच्छा। फिर अब्दुर्रहमान रज़ि इन दोनों में से एक का हाथ पकड़ के अलग ले गए और कहने लगे आप का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिश्ता का सम्बन्ध है और इस्लाम में भी वह स्थान है जो आप भी जानते हैं। अल्लाह आप का निगरान है। बताएं अगर मैं आपको अमीर बनाऊँ तो क्या आप ज़रूर इन्साफ़ करेंगे? और अगर मैं उसमान को अमीर बनाऊँ तो आप उस की बात सुनेंगे और उनका हुक्म मानेंगे? फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि दूसरे को एकान्त में ले गए और उनसे भी वैसे ही कहा। जब उन्होंने पुख़्ता वादा ले लिया तो कहने लगे उसमान आप अपना हाथ उठाएं और उन्होंने उनसे बैअत की और हज़रत अली रज़ि

ने भी उनसे बैअत की और घर वाले अंदर आ गए और उन्होंने भी उनसे बैअत की। यह बुख़ारी की रिवायत है

(सही अल बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी हदीस 3700)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो हज़रत उसमान की ख़िलाफ़त के चुनाव का विस्तार वर्णन करते हुए इस घटना का यूं ज़िक्र फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि जब ज़ख़्मी हुए और आप ने महसूस किया कि अब आप का आख़िरी वक़्त क़रीब है तो आप ने छ: आदमियों के बारे में वसीयत की कि वे अपने में से एक को ख़लीफ़ा निर्धारित कर लेंगे। वे छ: आदमी ये थे। हज़रत उसमान रज़ि। हज़रत अली रज़ि। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि। हज़रत सअद बिन वकास रज़ि। हज़रत ज़ुबैर रज़ि और हज़रत तलहा रज़ि । उस के साथ ही हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि को भी आप ने इस मश्वरे में शामिल करने के लिए निर्धारित फ़रमाया मगर ख़िलाफ़त का हक़दार क़रार न दिया और वसीयत की कि ये सब लोग तीन दिन में फ़ैसला करें और तीन दिन के लिए सुहैब रज़ि को नमाज़ का इमाम निर्धारित किया और मश्वरा की निगरानी मिक़दाद बिन असवद रज़ि के सपुर्द की और उन्हें हिदायत की कि वे सबको एक जगह जमा कर के फ़ैसला करने पर मजबूर करें और ख़ुद तलवार लेकर दरवाज़े पर पहरा देते रहें और फ़रमाया कि जिस पर अधिकतर लोगों की राय से सहमति हो सब लोग उस की बैअत करें और अगर कोई इनकार करे तो उसे क़तल कर दो लेकिन अगर दोनों तरफ़ तीन तीन हो जाएं तो अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि उन में से जिसको चुनें वह ख़लीफ़ा हो। अगर इस फ़ैसले पर वे राज़ी न हों तो जिस तरफ़ अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि हों वह ख़लीफ़ा हो। आख़िर पांचों सहाबा ने मश्वरा किया। क्योंकि तलहा रज़ि उस वक़्त मदीना में न थे मगर कोई नतीजा न निकला। बहुत लंबी बेहस के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि ने कहा कि अच्छा जो शख़्स अपना नाम वापस लेना चाहता है वह बोले। जब सब ख़ामोश रहे तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि ने कहा कि सब से पहले में अपना नाम वापस लेता हूँ। फिर हज़रत उसमान रज़ि ने कहा फिर बाक़ी दो ने। हज़रत अली रज़ि ख़ामोश रहे। आख़िर उन्होंने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि से वादा लिया कि वह फ़ैसला करने में कोई रियाइत नहीं करेंगे अर्थात हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि फ़ैसले में कोई रियाइत नहीं करेंगे। उन्होंने वादा किया और सब काम हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि के सपुर्द हो गया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि तीन दिन मदीना के घर-घर गए और मर्दों और औरतों से पूछा कि उनकी राय किस शख़्स की ख़िलाफ़त के हक़ में है? सब ने यही कहा कि उन्हें हज़रत उसमान रज़ि की ख़िलाफ़त स्वीकार है। अत: उन्होंने हज़रत उसमान रज़ि के हक़ में अपना फ़ैसला दे दिया और वह ख़लीफ़ा हो गए।

(उद्धरित ख़िलाफ़त राशिदा , अनवारुल उलूम भाग 15 पृष्ठ 488-489)

यह तारीख़ों के हवाले से हज़रत मुस्लेह मुऊद का वर्णन है

फ़तहुल बारी शरह सही बुख़ारी में लिखा है कि हज़रत तलहा रज़ि हज़रत उमर रज़ि की वसीयत के वक़्त हाज़िर न थे। यह मुम्किन है कि वह उस वक़्त हाज़िर हुए जब हज़रत उम्र रज़ि की वफ़ात हो चुकी थी। यह भी कहा जाता है कि वह उस वक़्त हाज़िर हुए जब मुशावरत अभी ख़त्म नहीं हुई थी। एक रिवायत के अनुसार जिसे ज़्यादा दरुस्त क़रार दिया गया है। वह हज़रत उसमान रज़ि की बैअत के बाद हाज़िर हुए थे।

(फ़तहुल बारी शरह सही अल बुख़ारी भाग 7 पृष्ठ 69 किताब फ़ज़ाइल अस्हाब-उन्नबी हदीस 3700 प्रकाशन दारुल मारफ़ा बेरूत। अलमकतब अलशामल)

बहरहाल हज़रत उसमान रज़ि ख़लीफ़ा चुने गए हुए और फिर यह निज़ाम मामूल पर आने लगा। जब हज़रत उसमान रज़ि शहीद हुए तो समस्त लोग हज़रत अली रज़ि की तरफ़ दौड़ते हुए आए जिनमें सहाबा रज़ि और इस के इलावा ताबईन भी शामिल थे। वे सब यही कह रहे थे कि अली रज़ि अमीरुल मोमनीन हैं यहां तक कि वे आप के घर हाज़िर हो गए। फिर उन्होंने कहा कि हम आपकी बैअत करते हैं। अत: आप अपना हाथ बढ़ाईए क्योंकि आप इस के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं। इस पर हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया यह तुम्हारा काम नहीं है बल्कि यह अस्हाबे बदर का काम है जिसके बारे में अस्हाबे बदर राज़ी हों तो वह ख़लीफ़ा होगा। अत: वे सब अस्हाबे बदर हज़रत अली रज़ि की ख़िदमत में हाज़िर हुए। फिर उन्होंने अर्ज़ की हम किसी को आप से ज़्यादा उस का हक़दार नहीं देखते। अत: अपना हाथ बढ़ाएं कि हम आप की बैअत करें। आप ने फ़रमाया तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि कहाँ हैं? सबसे पहले आप की ज़बानी बैअत हज़रत तलहा रज़ि ने की और दस्ती बैअत हज़रत सअद रज़ि ने की। जब हज़रत अली रज़ि ने यह देखा तो मस्जिद गए और मिंबर पर चढ़े। सबसे पहला शख़्स जो आप के पास ऊपर आया और उन्होंने बैअत की वह हज़रत तलहा रज़ि थे। इस के बाद हज़रत ज़ुबैर रज़ि और बाक़ी असहाबा रज़ि ने हज़रत अली रज़ि की बैअत की।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफितिस्सहाबा ले इब्ने असीर भाग 4 पृष्ठ 107 ज़िक्र अली बिन अबी तालिब, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत ज़ुबैर रज़ि और हज़रत आयशा रज़ि इत्यादि ने हज़रत अली रज़ि की बैअत की थी या नहीं उस का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं। यह ज़िक्र आप अपनी एक तक़रीर में कर रहे हैं जहां ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब के कुछ आरोपों के जवाब में आप ने यह ज़िक्र फ़रमाया और यह ज़िक्र वर्णन करना इंतिहाई ज़रूरी है इसलिए मैं वर्णन कर रहा हूँ। आप हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फ़रमाया कि

''तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि और हज़रत आयशा रज़ि के बैअत न करने से आप दलील न पकड़ें।" अर्थात ख़्वाजा साहिब को कह रहे हैं। "उनको इनकार ख़िलाफ़त न था बल्कि हज़रत उसमान रज़ि के क़ातिलों का सवाल था। फिर मैं आप को बताऊं जिसने आप से कहा है कि उन्होंने हज़रत अली रज़ि की बैअत नहीं की वह ग़लत कहता है। हज़रत आयशा रज़ि तो अपनी ग़लती का इक़रार कर के मदीना जा बैठीं और तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि नहीं फ़ौत हुए जब तक बैअत न कर ली। अत: कुछ हवाले नीचे लिखे जाते हैं।" ख़साइस कुबरा के भाग 2 का हवाला है। हाकिम ने रिवायत की है। अरबी हिस्सा है वह मैं छोड़ता हूँ। अनुवाद पढ़ देता हूँ

'' हाकिम ने रिवायत की है कि सौर बिन मज्जज़ा ने मुझ से ज़िक्र किया कि मैं जमल की घटना के दिन हज़रत तलहा रज़ि के पास से गुज़रा। इस वक़्त उनकी वफात की हालत क़रीब थी। मुझ से पूछने लगे कि तुम कौन से गिरोह में से हो? मैंने कहा कि हज़रत अमीरुल मोमनीन अली रज़ि की जमाअत में से हूँ तो कहने लगे अच्छा अपना हाथ बढ़ाऊ ताकि मैं तुम्हारे हाथ पर बैअत कर लूं।" अत: उन्होंने मेरे हाथ पर बैअत की "और फिर जान दे दी। मैंने आकर हज़रत अली रज़ि से सारी घटना निवेदन कर दी। आप सुनकर कहने लगे। अल्लाहो अकबर ख़ुदा के रसूल की बात क्या सच्ची साबित हुई। अल्लाह तआला ने यही चाहा कि तलहा मेरी बैअत के बिना जन्नत में न जाए

आप अशरा मबशरा में से थे।' हज़रत आयशा रज़ि के पास एक बार जमल की घटना वर्णन हुई तो कहने लगीं क्या लोग जमल की घटना का ज़िक्र करते हैं? किसी एक ने कहा जी। इसी का ज़िक्र है। कहने लगीं कि काश जिस तरह और लोग इस रोज़ बैठे रहे में भी बैठी रहती। इस बात की तमन्ना मुझे इस से कहीं बढ़कर है कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दस बच्चे जनती जिनमें से हर बच्चा अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हश्शाम जैसा होता। फिर अगली बात जो है वह यह है "...और तलहा रज़ि और ज़ुबैर अशरा मबशरा में से भी हैं जिनके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जन्नत की बशारत दी हुई है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बशारत का सच्चा होना यक़ीनी है। फिर यही नहीं बल्कि उन्होंने ख़ुरूज से रुजू और तौबा कर ली।"

(अलकौलुल फ़सल , अनवारुल उलूम भाग 2 पृष्ठ 318-319)

ये हवाला भी हज़रत मुस्लेह मुऔद ने दिया

हज़रत उसमान रज़ि की शहादत ,हज़रत अली ओकी बैअत और जंग जमल का तज़किरा वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मुऔद फ़रमाते हैं कि

''क़ातिलों के गिरोह विभिन्न तरफों में फैल गए थे और अपने आपको इल्ज़ाम से बचाने के लिए दूसरों पर इल्ज़ाम लगाते थे। जब उनको मालूम हुआ कि हज़रत अली रज़ि ने मुस्लमानों से बैअत ले ली है तो उनको आप पर इल्ज़ाम लगाने का उत्तम अवसर मिल गया और यह बात दरुस्त भी थी कि आप' अर्थात हज़रत अली रज़ि "के इर्द-गिर्द हज़रत उसमान रज़ि के क़ातिलों में से कुछ लोग जमा भी हो गए थे। इसलिए इन मुख़ालिफ़ीन को मुनाफ़क़ीन को इल्ज़ाम लगाने का उत्तम अवसर हासिल था। अत: उनमें से जो जमाअत मक्का की तरफ़ गई थी। उसने हज़रत आयशा रज़ि को इस बात पर तय्यार कर लिया कि वह हज़रत उसमान रज़ि के ख़ून का बदला लेने के लिए जिहाद का ऐलान करें। अत: उन्होंने इस बात का ऐलान किया और सहाबा रज़ि को अपनी मदद के लिए बुलाया किया। हज़रत तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि ने हज़रत अली रज़ि की बैअत इस शर्त पर कर ली थी कि वह हज़रत उसमान रज़ि के क़ातिलों से शीघ्र से शीघ्रतर बदला लेंगे। उन्होंने अर्थात इन दोनों ने ' जल्दी के जो अर्थ समझे थे। वह हज़रत अली रज़ि के निकट ख़िलाफ़ मुसलेहत थे। उनका ख़्याल था कि पहले समस्त सूबों का प्रबन्ध हो जाए। फिर

क़ातिलों को सज़ा देने की तरफ़ ध्यान दिया जाए क्योंकि सर्व प्रथम इस्लाम की हिफ़ाज़त है। क़ातिलों के मामला में देर होने से कोई हर्ज नहीं। इसी तरह क़ातिलों की निर्धारण में भी मतभेद था। जो लोग निहायत दुखी शक्लें बना कर सबसे पहले हज़रत अली रज़ि के पास पहुंच गए थे और इस्लाम में मतभेद हो जाने का अंदेशा ज़ाहिर करते थे उनके बारे में हज़रत अली रज़ि को कुदरती बात है शंका न होती थी कि ये लोग फ़साद का आरम्भ करने वाले हैं। दूसरे लोग उन पर शंका करते थे। इस मतभेद के कारण से तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि ने यह समझा कि हज़रत अली रज़ि अपने वादा से फिरते हैं। चूँकि उन्होंने एक शर्त पर बैअत की थी और वह शर्त उनके ख़्याल में हज़रत अली रज़ि ने पूरी न की थी इसलिए वह अपने आपको बैअत से आज़ाद ख़्याल करते थे। जब हज़रत आयशा रज़ि का ऐलान उनको पहुंचा तो वे भी उनके साथ जा मिले।' अर्थात हज़रत आयशा रज़ि के साथ "और सब मिलकर बस्रा की तरफ़ चले गए। बस्रा में गवर्नर ने लोगों को आपके साथ मिलने से रोके रखा लेकिन जब लोगों को मालूम हुआ कि तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि ने सिर्फ इकराह से और एक शर्त से क़ैद वाली हज़रत अली रज़ि की बैअत की है तो अक्सर लोग आपके साथ शामिल हो गए। जब हज़रत अली रज़ि को इस लश्कर का इलम हुआ तो आपने भी एक लश्कर तैयार किया और बस्रा की तरफ़ रवाना हुए। बस्रा पहुंच कर आपने एक आदमी को हज़रत आयशा रज़ि और तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि की तरफ़ भेजा। वह आदमी पहले हज़रत आयशा रज़ि की सेवा में हाज़िर हुआ और पूछा कि आप का इरादा किया है? उन्होंने जवाब दिया कि हमारा इरादा सिर्फ़ इस्लाह है इस के बाद इस व्यक्ति ने तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि को भी बुलवाया और उनसे पूछा कि आप भी इसी लिए जंग पर तय्यार हुए हैं? उन्होंने कहा कि हाँ। जो वजह बताई थी।"इस आदमी ने जवाब दिया कि अगर आपका इरादा सुधार है तो इस का यह तरीक़ा नहीं जो आपने धारण किया है। इस का नतीजा तो फ़साद है। इस समय देश की ऐसी हालत है कि अगर एक शख़्स को आप क़तल करेंगे तो हज़ार उस के समर्थन में खड़े हो जाऐंगे और इस का मुक़ाबला करेंगे तो और भी ज़्यादा लोग उनकी मदद के लिए खड़े हो जाऐंगे। अत: सुधार यह है कि पहले देश को एकता की रस्सी में बाँधा जाए फिर शरारत करने वालों को सज़ा दी जाए वर्ना इस बदअमनी में किसी को सज़ा देना देश में और फ़ित्ना डलवाना है। हुकूमत पहले क़ायम हो जाए तो वह सज़ा देगी। यह बात सुनकर उन्होंने कहा कि अगर हज़रत अली रज़ि का यही इरादा है तो वह आ जाएं हम उनके साथ मिलने को तैयार हैं। इस पर इस आदमी ने हज़रत अली रज़ि को सूचना दी और दोनों तरफ के प्रतिनिधि एक दूसरे को मिले और फ़ैसला हो गया कि जंग करना उचित नहीं सुलह होनी चाहिए।

जब यह ख़बर सबाइयों को (अर्थात जो अब्दुल्लाह बिन सबाह की जमाअत के लोग और हज़रत उसमान रज़ि के कातिल थे) पहुंची तो उनको सख़्त घबराहट हुई। और ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया उनकी एक जमाअत मश्वरा के लिए इकट्ठी हुई। उन्होंने मश्वरा के बाद फ़ैसला किया कि मुस्लमानों में सुलह हो जानी हमारे लिए सख़्त हानिकारक होगी क्योंकि इसी वक़्त तक हम हज़रत उसमान रज़ि के क़तल की सज़ा से बच सकते हैं जब तक कि मुस्लमान आपस में लड़ते रहेंगे। अगर सन्धि हो गई और अमन हो गया तो हमारा ठिकाना कहीं नहीं। इसलिए जिस तरह से हौसला न होने दो। इतने में हज़रत अली रज़ि भी पहुंच गए और आप के पहुंचने के दूसरे दिन आप की और हज़रत ज़ुबैर रज़ि की मुलाक़ात हुई। मुलाक़ात के समय हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया कि आप ने मेरे लड़ने के लिए तो लश्कर तैयार किया है मगर क्या ख़ुदा के हुज़ूर में पेश करने के लिए कोई बहाना भी तैयार किया है? आप लोग क्यों अपने हाथों से इस इस्लाम के तबाह करने के तय्यार हुए हैं जिसकी ख़िदमत सख़्त जांन दे कर की थी। क्या में आप लोगों का भाई नहीं? फिर क्या वजह है कि पहले तो एक दूसरे का ख़ून हराम समझा जाता था लेकिन अब हलाल हो गया। अगर कोई नई बात पैदा हुई होती तो भी बात थी जब कोई नई बात पैदा नहीं हुई तो फिर यह मुक़ाबला क्यों है? इस पर हज़रत तलहा रज़ि ने कहा वह भी हज़रत ज़ुबैर रज़ि के साथ थे। इस पर हज़रत तलहा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने कहा जो हज़रत ज़ुबैर रज़ि के साथ थे "कि आप ने हज़रत उसमान रज़ि के क़तल पर लोगों को उकसाया है। हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया कि मैं हज़रत उसमान रज़ि के क़तल में शरीक होने वालों पर लानत करता हूँ। फिर हज़रत अली रज़ि ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि से कहा कि क्या तुम को याद नहीं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि ख़ुदा की क़सम तू अली रज़ि से जंग करेगा और तू ज़ालिम होगा। ये सुनकर हज़रत ज़ुबैर रज़ि अपने लश्कर की तरफ़ वापस लौटे और क़सम खाई कि वह हज़रत अली रज़ि से हरगिज़ जंग नहीं करेंगे और इक़रार किया कि उन्होंने इजतिहाद में ग़लती की। जब यह ख़बर लश्कर में फैली तो सबको सन्तोष हो गया कि अब जंग न होगी बल्कि सुलह हो जाएगी लेकिन फसाद करने वालों को सख़्त घबराहट होने लगी और जब रात हुई तो उन्होंने सुलह को रोकने के लिए यह तरीका धारण किया कि उनमें से जो हज़रत अली रज़ि के साथ थे उन्होंने हज़रत आयशा रज़ि और हज़रत तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि के लश्कर पर रात के वक़्त हमलाकर दिया और जो उन के लश्कर में थे उन्होंने हज़रत अली रज़ि के लश्कर पर हमाला कर दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि एक शोर पड़ गया और हर पक्ष ने ख़्याल किया कि दूसरे पक्ष ने इस से धोका किया हालाँकि असल में यह सिर्फ़ फसादियों का एक मन्सूबा था। जब जंग शुरू हो गई तो हज़रत अली रज़ि ने आवाज़ दी कि कोई शख़्स हज़रत आयशा रज़ि को सूचना दे। शायद उनके द्वारा अल्लाह तआला इस फ़ित्ना को दूर कर दे। अत: हज़रत आयशा रज़ि का ऊंट आगे किया गया लेकिन नतीजा और भी ख़तरनाक निकला। मुफसिदों ने यह देखकर कि हमारी चालाकी फिर उल्टी पड़ने लगी। हज़रत आयशा रज़ि के ऊंट पर तीर मारने शुरू किए। हज़रत आयशा रज़ि ने ज़ोर ज़ोर से पुकारना शुरू किया कि हे लोगो जंग को छोड़ दो। और ख़ुदा और क़यामत के दिन को करो लेकिन फसाद फैलाने वाले न रुके और बराबर आप के ऊंट पर तीर मारते चले गए। चूँकि बस्रा वाले इस लश्कर के साथ थे जो हज़रत आयशा रज़ि के इर्द-गिर्द जमा हुआ था। उनको यह बात देखकर सख़्त ग़ुस्सा आया और उम्मुल मोमेनीन का यह अपमान देखकर उनके ग़ुस्सा की कोई सीमा नारही और तलवारें खींच कर विरोधी लश्कर पर हमला कर दिया। और अब यह हाल हो गया कि हज़रत आयशा रज़ि का ऊंट जंग का मर्कज़ बन गया। सहाबा और बड़े बड़े बहादुर उस के इर्द-गिर्द जमा हो गए और एक के बाद एक क़त्ल होना शुरू हुआ लेकिन ऊंट की बाग उन्होंने न छोड़ी। हज़रत ज़ुबैर रज़ि तो जंग में शामिल ही न हुए और एक तरफ़ निकल गए मगर एक बद किस्मत ने उनके पीछे से जा कर इस हालत में कि वह नमाज़ पढ़ रहे थे उनको शहीद कर दिया। हज़रत तलहा रज़ि ठीक जंग के मैदान में इन मुफसिदों के हाथ से मारे गए। जब जंग तेज़ हो गई तो यह देखकर कि इस वक़्त तक जंग ख़त्म न होगी जब तक हज़रत आयशा रज़ि को बीच से हटाया न जाए कुछ लोगों ने आपके ऊंट के पांव काट दिए और हौदज उतार कर ज़मीन पर रख दिया। तब कहीं जा कर जंग ख़त्म हुई। इस घटना को देखकर हज़रत अली रज़ि का चेहरा मारे दुख के लाले हो गया लेकिन यह जो कुछ हुआ इस से बचने का रास्ता भी न था। जंग के ख़त्म होने पर जब मक़्तूलीन में हज़रत तलहा रज़ि की लाश मिली तो हज़रत अली रज़ि ने सख़्त अफ़सोस किया

इन समस्त घटनाओं से साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि इस लड़ाई में सहाबा रज़ि का हरगिज़ कोई दख़ल न था बल्कि यह शरारत भी उसमान रज़ि के कातिलों की ही थी और यह कि हज़रत तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि हज़रत अली रज़ि की बैअत ही में फ़ौत हुए क्योंकि उन्होंने अपने इरादा से रुजू कर लिया था और हज़रत अली रज़ि का साथ देने का इक़रार कर लिया था लेकिन कुछ शरारत करने वालों के हाथों से मारे गए। अत: हज़रत अली रज़ि ने उनके क़ातिलों पर लानत भी की।"

(अनवारे ख़िलाफ़त ,अन्वारुल उलूम भाग 3 पृष्ठ 198 से 201)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

जंग जमल और हज़रत तलहा रज़ि की शहादत का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि एक और स्थान पर फ़रमाते हैं कि अंबिया जब दुनिया में आते हैं तो उनके आरम्भिक दिनों में जो लोग ईमान लाते हैं वही बड़े समझे जाते हैं। हर मुस्लमान जानता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबू बकर रज़ि , हज़रत उम्र रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि , हज़रत अली रज़ि , हज़रत तलहा रज़ि, हज़रत ज़ुबैर रज़ि, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि , हज़रत सअद रज़ि और हज़रत सईद रज़ि वे लोग थे जो बड़े समझे जाते थे। मगर उनके बड़े समझे जाने का कारण यह नहीं था कि उनको आराम ज़्यादा मिलता था बल्कि उनके बड़े समझे जाने की वजह यह थी कि धर्म के लिए उन्होंने दूसरों से ज़्यादा तकलीफ़ें बर्दाश्त की थीं। हज़रत तलहा रज़ि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद भी ज़िन्दा रहे और जब हज़रत उसमान रज़ि की शहादत के बाद मुस्लमानों में मतभेद पैदा हुआ और एक गिरोह ने कहा कि हज़रत उसमान रज़ि के मारने वालों से हमें बदला लेना चाहिए तो इस गिरोह के लीडर हज़रत तलहा रज़ि हज़रत ज़ुबैर रज़ि और हज़रत आयशा रज़ि थे लेकिन दूसरे गिरोह ने कहा कि मुस्लमानों में मतभेद पड़ चुका है। आदमी मरा ही करते हैं। सब से पहले हमें समस्त मुस्लमानों को इकट्ठा करना चाहिए ताकि इस्लाम की शौकत और इस की महानता स्थापित हो। बाद में हम उन लोगों से बदले ले लेंगे। इस गिरोह के लीडर हज़रत अली रज़ि थे। यह मतभेद इतना बढ़ा कि हज़रत तलहा रज़ि, हज़रत ज़ुबैर रज़ि और हज़रत आयशा रज़ि ने इल्ज़ाम लगाया कि अली रज़ि उन लोगों को पनाह देना चाहते हैं जिन्हों ने हज़रत उस्मान रज़ि को शहीद किया है और हज़रत अली रज़ि ने इल्ज़ाम लगाया कि इन लोगों को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ ज़्यादा प्रथम हैं। इस्लाम का फ़ायदा उनको समक्ष नहीं। मानों तभेद अपने चरम तक पहुंच गया और फिर आपस में जंग भी शुरू हुई। ऐसी जंग जिसमें हज़रत आयशा रज़ि ने लश्कर की कमान की।

हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत ज़ुबैर रज़ि भी इस लड़ाई में शामिल थे। जैसा कि पहले ज़िक्र हुआ है कि शुरू में विरोधियों में शामिल थे। फिर हज़रत ज़ुबैर रज़ि तो हज़रत अली रज़ि की बात सुनकर अलग हो गए थे और दूसरे भी सुलह करना चाहते थे लेकिन फिर विरोधी जो थे उन्होंने, और जो मुनाफ़क़ीन थे या जो फ़ित्ना फैलाने वाले थे उन्होंने फिर फ़ित्ना डाला लेकिन बहरहाल दो गिरोह थे ये और लड़ाई में शामिल थे और दोनों पक्ष में जंग जारी थी तो एक सहाबी हज़रत तलहा रज़ि के पास आए और उनसे कहा तलहा तुम्हें याद है कि अमुक अवसर पर मैं और तुम रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में बैठे हुए थे कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था तलहा रज़ि एक वक़्त ऐसा आएगा कि तुम अन्य लश्कर में होगे और अली रज़ि अन्य लश्कर में होगा और अली रज़ि हक़ पर होगा और तुम ग़लती पर होगे। हज़रत तलहा रज़ि ने यह सुना तो उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने कहा हाँ मुझे यह बात याद आ गई है और फिर उसी वक़्त लश्कर से निकल कर चले गए। जब वह लड़ाई छोड़कर जा रहे थे ताकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात पूरी की जाए तो एक बद-बख़्त इन्सान जो हज़रत अली रज़ि के लश्कर का सिपाही था उसने पीछे से जा कर आप को ख़ंजर मार कर शहीद कर दिया। हज़रत अली रज़ि अपनी जगह पर बैठे हुए थे। वह जो हज़रत तलहा रज़ि का क़ातिल था वह इस ख़्याल से कि मुझे बहुत बड़ा इनाम मिलेगा दौड़ता हुआ आया और उसने हज़रत अली रज़ि को कहा कि हे अमीरुल मोमनीन आपको आपके दुश्मन के मारे जाने की ख़बर देता हूँ। हज़रत अली रज़ि ने कहा कौन दुश्मन? उसने कहा हे अमीरुल मोमनीन मैंने तलहा रज़ि को मार दिया है। हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया हे शख़्स में भी तुझे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से बशारत देता हूँ कि तू दोज़ख़ में डाला जाएगा क्योंकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार फ़रमाया था जबकि तलहा रज़ि भी बैठे हुए थे और में भी बैठा हुआ था कि हे तलहा !तू एक बार हक़ तथा इन्साफ़ के लिए अपमान बर्दाश्त करेगा और तुझे एक शख़्स मार डालेगा मगर ख़ुदा उस को जहन्नुम में डालेगा।

इस लड़ाई में जब हज़रत अली रज़ि और हज़रत तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि के लश्कर की सफ़ें एक दूसरे के आमने सामने खड़ी हुईं तो हज़रत तलहा रज़ि अपने समर्थन में दलीलें वर्णन करने लगे। यह उस वक़्त से पहले की बात है जब एक सहाबी ने उन्हें हदीस याद दिलाई थी और वह जंग छोड़कर चले गए थे। वह दलीलें वर्णन कर ही रहे थे कि हज़रत अली रज़ि के लश्कर में से एक शख़्स ने कहा हे टुंडे चुप कर। हज़रत तलहा रज़ि का एक हाथ बिलकुल बेकार था वह काम नहीं करता था। जब उसने कहा हे टुंडे चुप कर। तो हज़रत तलहा रज़ि ने फ़रमाया कि तुमने कहा तो यह है कि टुंडे चुप कर मगर तुम्हें पता भी है कि मैं टुंडा किस तरह हुआ हूँ। उहद की जंग में जब मुस्लमानों के क़दम उखड़ गए और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ बारह आदमी रह गए तो तीन हज़ार काफ़िरों के लश्कर ने हमें घेरे में ले लिया और उन्होंने इस ख़्याल से चारों तरफ़ से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तीर बरसाने शुरू कर दिए कि अगर आप मारे गए तो तमाम काम ख़त्म हो जाएगा। इस वक़्त कुफ़्फ़ार के लश्कर के हर सिपाही की कमान मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह की तरफ़ तीर फेंकती थी। तब मैंने अपना हाथ रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह के आगे कर दिया और कुफ़्फ़ार के लश्कर के सारे तीर मेरे इस हाथ पर पड़ते रहे यहां तक कि मेरा हाथ बिलकुल बेकार हो कर टुंडा हो गया मगर मैंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह के आगे से अपना हाथ नहीं हटाया।

(उद्धरित आइन्दा वही कौमें इज़्ज़त पाएँगी जो माली तथा जानी..., अनवारुल उलूम भाग 21 पृष्ठ 149 से 151)

जंग जमल के अवसर पर एक और जगह हज़रत तलहा रज़ि का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मुऊद रज़ि फ़रमाते हैं। किसी ने कहा कि वह टंडा मारा गया। एक सहाबी रज़ि ने जो इस बात को सुन रहे थे कहा कम्बख़्त तुझे मालूम है कि वह टुंडा कैसे टुंडा हुआ जंग उहद के अवसर पर जब एक ग़लतफ़हमी की वजह से सहाबा रज़ि का लश्कर जंग के मैदान से भाग गया और कुफ़्फ़ार को यह मालूम हुआ कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल कुछ लोगों के साथ जंग के मैदान में रह गए हैं तो लगभग तीन हज़ार काफ़िरों का लश्कर आप पर चारों तरफ़ से उमड़ आया और सैंकड़ों तीर अंदाज़ों ने कमानें उठा लीं और अपने तीरों का निशाना रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह को बिना लिया ताकि तीरों की बोछाड़ से इस को छेद डालें। इस वक़्त वह आदमी जिसने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक चेहरा की हिफ़ाज़त के लिए अपने आपको खड़ा क्या वह तलहा रज़ि था। तलहा रज़ि ने अपना हाथ रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे खड़ा कर दिया और हर तीर जो गिरता था बजाय आप के चेहरे पर पड़ने के तलहा के हाथ पर पड़ता था। इस तरह तीर पड़ते गए यहां तक कि ज़ख़्म मामूली ज़ख़म न रहे और ज़ख़मों की अधिकता के कारण से तलहा के हाथ के पट्ठे मारे गए और उनका हाथ मफ़लूज हो गया। तो जिसको तुम हीनता के साथ टुंडा कहते हो उस का टुंडा होना ऐसी नेअमत है कि हम में से हर शख़्स इस बरकत के लिए तरस रहा है।

(उद्धरित ख़ुतबाते महमूद भाग 26 पृष्ठ 386 ख़ुत्बा जुमअ: 28 सितम्बर1945 ई)

रिबी बिन हिराश से रिवायत है कि मैं हज़रत अली रज़ि के पास बैठा हुआ था कि इमरान बिन तलहा आए। उन्होंने हज़रत अली रज़ि को सलाम किया। हज़रत अली रज़ि ने उनको कहा मरहवा इमरान बिन तलहा मरहबा इमरान बिन तलहा ने कहा हे अमीरुल मोमनीन आप मुझे मरहबा कहते हैं हालाँकि आप ने मेरे पिता को क़तल किया और मेरा माल ले लिया। हज़रत अली रज़ि ने कहा कि तुम्हारा माल तो बैयतुल माल में अलग पड़ा हुआ है। सुबह को अपना माल ले जाना। एक रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया मैंने उसे अपने तसर्रुफ़ में इसलिए ले लिया था कि लोग उसे उचक न लें। ले न जाएं कहीं और जहां तक तुम्हारा यह कहना है कि मैंने तुम्हारे वालिद को क़तल कर दिया तो मैं उम्मीद करता हूँ कि मैं और तुम्हारे पिता उन लोगों में से होंगे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ

(अल-हिजर 48)

और हम उनके दिलों से जो भी कीने हैं निकाल बाहर करेंगे, भाई भाई बनते हुए तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 169 मन बनी तीम बिन मरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

मुहम्मद अन्सारी अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जंग जमल के दिन एक शख़्स हज़रत अली रज़ि के पास आया और कहा तलहा रज़ि के क़ातिल को अन्दर आने की इजाज़त दें। रावी कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ि को कहते सुना कि इस क़ातिल को दोज़ख़ की ख़बर सुना दो।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 169 मन बनी तीम बिन मरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत तलहा रज़ि जब शहीद हुए और हज़रत अली रज़ि ने उनको कत्ल हुआ देखा तो उनके, हज़रत तलहा रज़ि के चेहरे पर से मिट्टी पोंछने लगे और फ़रमाया हे अबू मुहम्मद यह बात मुझ पर बहुत बुरी है कि मैं तुझको आसमान के तारों के नीचे मिट्टी में लिपटा देखूं। फिर हज़रत अली रज़ि ने यह फ़रमाया कि मैं अल्लाह के हुज़ूर अपनी कमज़ोरियों और दुखों की फ़र्याद करता हूँ। फिर हज़रत तलहा रज़ि के लिए रहमत की दुआ की और फ़रमाया कि काश मैं इस दिन से बीस साल पहले मर गया होता। हज़रत अली रज़ि और उनके साथी बहुत रोए। हज़रत अली ने एक बार एक शख़्स को यह शेअर पढ़ते सुना

فَتًى كَانَ يُدْنِيْهِ الْغِنٰى مِنْ صَدِيْقِهٖ
اِذَا مَا هُوَ اسْتَغْنٰى وَيُبْعِدُهُ الْفَقْرُ

वह एक ऐसा नौजवान था जो दौलत-मंदी और ग़नी होने की हालत में दोस्तों से मिलजुल कर रहता था और मोहताजी के समय उनसे अलग हो जाता था। हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया इस शेअर के मिस्दाक़ तो अबू मुहम्मद तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि थे। अल्लाह उन पर रहम करे

(उसदुल ग़ाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 87 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

यहां उनका ज़िक्र समाप्त हुआ।

अब जो आजकल के हालात हैं उस के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक उद्धरण भी पढ़ देता हूँ। एक अवसर पर आप ने मुफ़्ती साहिब को फ़रमाया कि मकानों को रोशन रखें और आजकल घरों में (ताऊन के दिनों की बात है) ख़ूब सफाई रखनी चाहिए। कपड़ों को भी सुथरा रखना चाहिए। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आजकल दिन बहुत सख़्त हैं और हवा ज़हरीली है और सफाई रखना सुन्नत है। क़ुरआन शरीफ़ में भी लिखा है

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ۔ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ

(उद्धरित मलफ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 273-274)

फिर एक अवसर पर फ़रमाया:"वे लोग जिनके शहरों और देहात में ताऊन शिद्दत के साथ फैल गया है। अपने शहरों से दूसरी जगह न जाएं। अपने मकानों की सफाई करें और उन्हें गर्म रखें और ज़रूरी हिफाज़त की ज़रूरी बातें अमल में लाएं और सबसे बढ़कर यह कि सच्ची तौबा करें और पाक तबदीली कर के ख़ुदा तआला से सुलह करें। रातों को उठ उठकर तहज्जुद में दुआएं मांगें।" फिर आप ने फ़रमाया कि "... अपनी हालत की सच्ची तबदीली ही ख़ुदा के इस अज़ाब से बचा सकेगी। وَنِعْمَ مَا قِيْلَ।

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 234)

अल्लाह तआला हर अहमदी को तौफ़ीक़ दे कि वह इन दिनों में खासतौर पर दुआओं पर ज़ोर दे। हुकूमत की हिदायतों पर अमल भी करें। घरों को भी साफ़ रखें। धूनी भी देनी चाहिए। डिटोल इत्यादि के स्प्रे भी करते रहें वह भी मिल जाते हैं। अल्लाह तआला सब पर फ़ज़ल फ़रमाए और रहम फ़रमाए। बहरहाल खासतौर पर इन दिनों में दुआओं पर ख़ास ज़ोर दें। अल्लाह सब को इस की तौफ़ीक़ दे।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 24 फरवरी 2020 ई पृष्ठ 5 से 8)

☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

पृष्ठ 2 का शेष

स्पैट आने पर स्वागत भी किया। मैं ख़लीफ़ा का ख़िताब सुनने के लिए फिर दोबारा आना चाहता था। मैं ख़लीफ़ा के ख़िताब से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आप सब में एक गहरा आपसी रिश्ता महसूस होता है। आप लोग समाज के लिए एक सक्रिय हिस्सा हैं। इसलिए यहां आने को दिल करता है।

शहर Rotter Dam से आने वाले एक मेहमान Erik JAN KliJN साहिब ने कहा आपका जलसा बड़ा अमन वाला था। मुझे ख़लीफ़ा की सबसे अच्छी बात यह लगी कि उन्होंने इन्सानी अधिकार पर बात की और लोगों को अमन और सलामती की तरफ़ बुलाया।

ROTTERDAM से आने वाले एक दूसरे मेहमान Herman Mee Ter साहिब ने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा: जलसा पर आने से पहले मैं घबराया हुआ था कि इस जलसा पर मुसलमान इकट्ठे हो रहे हैं पता नहीं कि क्या होगा मगर यहां आकर बड़ी हैरत हुई कि अमन की बातें हो रही हैं। मुझे ख़लीफ़ा की सबसे अच्छी बात ये लगी कि उन्होंने बड़े साहस से बात की है। पोप प्राय रंग में अमन की बात करता है मगर आपके ख़लीफ़ा ने स्पष्ट रूप से ताक़तवर क़ौमों को सम्बोधित करके बात की है।

एक औरत Christna ने वर्णन किया कि मैं जमाअत को एक समय से जानती हूँ। इस जमाअत की मेहमान नवाज़ी का एक ख़ास गुण है। जमाअत का रहनुमा अच्छा है इसलिए जमाअत भी अच्छी है। मुझे हुज़ूर का ख़िताब बहुत अच्छा लगा। ख़लीफ़ा वक़्त ने हर बात बहुत स्पष्ट और खुल कर की। ख़लीफ़ा ने जो बातें भी कीं वे वक़्त की ज़रूरत के ठीक अनुसार थीं

एम्सटर्डम से आने वाले मेहमान Siros Raja Jugde ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा हुज़ूर का पैग़ाम बहुत शान्तिप्रिय है और दिलों पर प्रभाव करने वाला है। जलसा बहुत मुनज़्ज़म था। मैं समस्त प्रबन्ध से बहुत हैरान हुआ हूँ।

एक बैअत करने वाले दोस्त तौफ़ीक़ जामावी साहिब जिनका सम्बन्ध मराक़श से है और वह बेल्जियम में निवासी हैं और वहां से इस प्रोग्राम में शामिल होने के लिए आए थे। वर्णन करते हैं कि हम इसलिए यहां आए कि हुज़ूर अनवर को देख सकें और हुज़ूर के अनुकरण में नमाज़ें पढ़ सकें। हुज़ूर अनवर के ख़िताब का एक एक शब्द हमारे दिल तक पहुंचा है। हुज़ूर अनवर ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा हसना को पेश करके दुनिया को इस्लाम की वास्तविक तस्वीर दिखाई है। हुज़ूर अनवर के ख़िताब ने हम में एक नई जान डाल दी है।

बेल्जियम से दो नौ मुबाईन, एक शेख़ हसन साहिब जिनका सम्बन्ध मराक़श से है और दूसरे बशीर बिन कहला साहिब, उनका सम्बन्ध अल-जज़ाइर से है, ये दोनों जलसा में शामिल हुए। ये दोनों कुछ फ़ित्ना फैलाने वालों की वजह से धीरे-धीरे जमाअत से दूर हो रहे थे। उन्होंने जमाअत का वाट्स एप्प ग्रुप भी छोड़ दिया था। हुज़ूर अनवर के ख़िताबों को सुनने के बाद इन दोनों ने स्पष्ट इस बात का इज़हार किया कि जमाअत से और ख़िलाफ़त से दूर हो कर हम से बहुत बड़ी ग़लती होने लगी थी। हम इस ख़्याल को तर्क करते हैं। अब उन्होंने कहा है कि हम दोनों को दोबारा जमाअत के वाट्स एप्प ग्रुप में डाल जाए।

एक डच मियां बीवी Fatih और Gisele आज के इस प्रोग्राम में शामिल हुए। उन्होंने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा। जलसा में सब लोग बहुत ही अच्छे आचरण वाले थे। आज एक जन्नत तुल्य माहौल था। ख़लीफ़ा का ख़िताब बहुत प्रभावित करने वाला था। आपके मित्र ज़मीन ने भी हमें बहुत प्रभावित किया है, वह बहुत अच्छा साथ साथ सीधा अनुवाद करते हैं।

नन स्पैट शहर के मेयर Van der Weert ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा नन स्पैट के लोगों की तरफ़ से यहां कुछ शब्द कहने की दावत मिली। पिछले साल भी मैं एक प्रोग्राम में आया था। इस बार तो हुज़ूर पधारे हुए हैं, इस लिहाज़ से यह प्रोग्राम बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। पिछले साल की तरह अब भी मुझे आपके प्रोग्राम में शामिल हो कर बहुत अच्छा लग रहा है।

हुज़ूर अनवर ने बहुत उच्च अंग्रेज़ी ज़बान में ख़िताब किया, जो कि मेरे जैसों के लिए कुछ समझना मुश्किल था। परन्तु जो कुछ मैंने अपनी आँखों से यहां देखा है, वह वर्णन से बाहर है। एक बड़े हाल में लोग बड़े ध्यान से हुज़ूर की बातें सुन रहे थे।

यह मैंने अपनी तक़रीर में भी कहा था। आजकल के हालात में हमें ज़िन्दगी को समझने की ज़रूरत है। इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि कोई ईसाई है या मुसलमान , ज़रूरी यह है कि हम अपनी जन्म के उद्देश्य को तलाश करें और उसे समझें। और ऐसे प्रोग्राम में शामिल करके आपको इस बात का अंदाज़ा होता है। यह बहुत ही क़ीमती सन्देश था।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत समाज में एक अहम किरदार अदा कर रही है। बतौर म्यूंसिपल्टी ऐडमिनिस्ट्रेटर मेरे यहां अहमदियों से अच्छे सम्बन्ध हैं। हम जब चाहें एक दूसरे से मिल सकते हैं और इस के बहुत लाभ हैं। जब भी ज़रूरत हो हम एक दूसरे को बुला लेते हैं। आज जैसे प्रोग्राम जहां म्यूंसिपल्टी भी प्रबन्ध में शामिल है, तो यहां आप लोगों के प्रतिनिधि और हमारे प्रतिनिधि मिल बैठ कर प्लान करते हैं। कुछ सभ्याचार के अन्तर हैं, जो हमें अब वक़्त के साथ समझ आ गई है और अब हम इस के आदी हैं। हम एक दूसरे को बेहतर से बेहतर जान रहे हैं और इसी कोशिश में हैं।

मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। उम्मीद करता हूँ कि आप लोग और अधिक ऐसे प्रोग्राम करेंगे ताकि इन्सानी ज़िन्दगी के बारे में पैदा होने वाले सवालों के जवाब मिल सकें।

बेल्जियम से सम्बन्ध रखने वाली एक मेहमान Annie Sels साहिबा भी इस आयोजन में शामिल हुईं। उन्होंने कहा: मैं बेल्जियम से यहां हुज़ूर की तक़रीर सुनने आई हूँ। आपको देखकर और सुन कर बहुत ताक़त मिलती है और आप सारी ज़मीन पर सबसे अधिक अम्न पसंद शख़्सियत हैं। आप इतने बड़े लीडर हैं लेकिन फिर भी बड़े आसान शब्द में आम लोगों से उनकी समझ के अनुसार बात करते हैं। मेरी इच्छा है कि दुनिया के अन्य रहनुमा भी आपसे सबक़ सीखें क्योंकि दुनिया बहुत इंतिहापसंद हो रही है। लोग एक दूसरे को न समझते हैं और न ही एक दूसरे से बात करना चाहते हैं। लोग सिर्फ सोशल मीडिया से सीखे हुए नारे लगाते हैं, यह ठीक नहीं है। इस के विपरीत आप जिस तरह लोगों को समझाते हैं, यह बहुत ही प्रभावित करने वाला है। मैं समझती हूँ कि आप दुनिया के बहुत से लीडर्ज़ के लिए अनुकरण योग्य नमूना हैं।

हुज़ूर अनवर की शख़्सियत बहुत धीमी है। कमाल विनम्रता है। आप ऐसे नहीं हैं कि अपनी आवाज़ बुलंद करके समझाएँ, बल्कि आपके बोलने का अंदाज़ बहुत ही नरम और दिल को भाने वाला है। यह बहुत ही आवश्यक है।

एक मेहमान Dini Harkink साहिब भी इस आयोजन में शामिल थे। उन्होंने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: मेरा तालीमी बैकग्रांऊड है और चार साल पहले मैंने एक संस्था में डच ज़बान पढ़ाना शुरू किया। यहां मेरी मुलाक़ात एक पाकिस्तानी फ़ैमिली से हुई जो लगभग एक साल पहले ही हॉलैंड आई थी। यह भाषा सीखने इस संस्था में आए थे। उनसे मेल मिलाप बढ़ा। उन्हें मैंने हर तरह से सहयोग का यक़ीन दिलाया। उनके बच्चे मुझे मिलते रहते हैं और हर हफ़्ता कुछ वक़्त वह मेरे साथ ही गुज़ारते हैं। इन बच्चों से मुझे आपकी जमाअत के बारे में ज्ञान हुआ।

मुझे यहां आकर बहुत अच्छा महसूस हो रहा है क्योंकि आपके ख़लीफ़ा भी समस्त लोगों के मध्य अमन और आपसी बराबरी की बात कर रहे हैं। मैं ख़ुद ईसाई हूँ और देख सकता हूँ कि आपकी जमाअत सिर्फ़ अहमदियों से ही नहीं बल्कि हर मज़हब से सम्बन्ध रखने वाले से अच्छा व्यवहार करती है। ख़ासकर एक मुसलमान रहनुमा से ये बातें सुनना बहुत अच्छा था क्योंकि आजकल इस्लाम के बारे में ग़लत विचार हैं।

आप जैसी जमाअत जोकि हॉलैंड के समाज में शामिल होने पर यक़ीन रखती है, ऐसी जमाअत से आपसी भाईचारा और आपसी प्यार के पैग़ाम की समाज को बहुत ज़रूरत है। आप लोग मुहब्बत पर यक़ीन रखते हैं। मेरा ख़्याल है कि हम सबको मुहब्बत फैलाने की ही कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि अगर हम मुहब्बत फैलाएंगे तो यह हॉलैंड और दुनिया के लिए बेहतर होगा। ख़लीफ़ा के वजूद में जो अमन और सुकून नज़र आता है, वह बहुत शानदार था। आपने दुनिया में फैली बदअमनी का ज़िक्र किया और फिर अमन की स्थापना की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। हम ज़मीन पर एक दूसरे से मिलकर रहते हैं। हमें साथ रहना है , साथ मिलकर काम करना है। मुझे इस आयोजन में बुलाने करने का बहुत शुक्रिया। मेरी नेक इच्छाए आपके साथ हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की हॉलैंड आमद पर 'Ons Almere" ने अपनी 25 सितम्बर दिनांक बुधवार के प्रकाशन में लिखा: अमन का ख़लीफ़ा हॉलैंड तशरीफ़ ला रहा है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद 39 वें जलसा सालाना हॉलैंड में शामिल के लिए और मस्जिद बैयतुल आफियत के उद्घाटन के लिए हॉलैंड पधारे हैं। ख़लीफ़तुल मसीह पूरी दुनिया में इन्सानी सेवा और मानव जाति की सेवा को कर रहे हैं। इसी तरह पूरी दुनिया में अमन और धार्मिक बराबरी को बढ़ावा दे रहे हैं। ख़लीफ़ा वक़्त ने दुनिया के अन्य पार्लीमैंट के अतिरिक्त डच पार्लीमैंट में भी ख़िताब किया है। 1 अक्तूबर को वह अलमेरे शहर में मस्जिद बैयतुल आफियत का उद्घाटन करेंगे।

29 सितम्बर 2019 ई (दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे जलसा गाह में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ फ़ज्र के वक़्त बहुत तेज़ बारिश हो रही थी। हुज़ूर अनवर की रिहायश गाह से जलसा गाह तक का दूरी एक फ़र्लांग के क़रीब है। सिक्योरिटी स्टाफ़ ने गाड़ियां तय्यार की हुई थीं लेकिन हुज़ूर अनवर इस तेज़ बारिश में पैदल ही तशरीफ़ ले गए। छतरी ने सिर्फ उसी हद तक काम किया जितना उस का दायरा कार था। बाक़ी बारिश ने भी अपना काम दिखाया। रास्ता में भी जगह जगह पानी खड़ा था। हर क़दम देखकर रखना पड़ता था। फिर नमाज़ की अदायगी के बाद भी बारिश में ही वापसी हुई। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, ख़ुतूत और रिपोर्टस देखीं और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर की विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

आज जमाअत अहमदिया हॉलैंड के जलसा सालाना का तीसरा और आख़िरी दिन था। प्रोग्राम के अनुसार तीन बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में पधारे और नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जैसे स्टेज पर पधारे तो सारा जलसा गाह पर जोश नारों से गूंज उठा। जमाअत के लोगों ने बड़े जोश के साथ नारे बुलंद किए

जलसा सालाना हॉलैंड का समापन आयोजन

समापन आयोजन का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय एमन फ़ज़ल ऊदा साहिब ने की और इस का उर्दू अनुवाद आदरणीय सईद अहमद जट साहिब मुबल्लिग़ हॉलैंड ने पेश किया। इस के बाद आदरणीय हम्माद अहमद अब्बासी साहिब ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मंजूम कलाम

किस क़दर ज़ाहिर है नूर उस मब्दुल अनवार का

बन रहा है सारा आलम आइना अबसार का

ख़ुश-अल्हानी से पेश किया। इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने तालीमी मैदान में उच्च कामयाबी प्राप्त करने वाले14 छात्रों को अस्नाद और मैडल प्रदान फ़रमाए। तालीमी अस्नाद प्राप्त करने वाले इन ख़ुशनसीब छात्रों के नाम निम्नलिखित हैं

हिशाम राना Primary Education बोर्ड की परीक्षा में100 प्रतिशत नम्बर

फ़राज़ हारून चौधरी(प्राइमरी एजूकेशन बोर्ड की परीक्षा में 100 प्रतिशत नम्बर

क़मर जावेद सिलियरी हॉलैंड हायर सेकंडरी एजूकेशन बोर्ड की परीक्षा में 81प्रतिशत नम्बर

उसामा अहमद बिन नूर (एफ़ एससी परी मैडीकल Eindhoven)

ज़ैन बारी मलिक बी एस सी बायो मैडीकल नेचुरल साईंसिज़ एम्सटर्डम

सअद अहमद बी एससी इलैक्ट्रीकल इंजीनीयरिंग Zwolle हॉलैंड

ज़ुल अलरहमान(बी एस सी Leiden हॉलैंड)

अनस इक़बाल एम एस सी पाकिस्तान स्टडीज़ नन स्पैट

मशहूद चौधरी (एम एस सी Medicine Maastricht)

शरजील अहमद मलिक एम एस सी ICT in Business Leiden)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

राहील अहमद चौधरी एम एससी, इंटरनैशनल मैनिजमंट ऐंड ग्लोबल बिज़नस जमाअत Schiedam हॉलैंड

फ़राज़ अहमद (एम एस सी इलैक्ट्रीकल इंजीनीयरिंग Arnhem हॉलैंड)

मुहम्मद अहमद तारिक़ (ऐम एससी अकाओंटनसी Almere हॉलैंड

तलहा अहमद(एम एस सी Mathematics एम्सटर्डम हॉलैंड

तालीमी ऐवार्ड की इस आयोजन के बाद तीन बज कर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया

समापन ख़िताब हुज़ूर अनवर

तशह्हुद, ताव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सूरत अलसफ़ की आयत 9 की तिलावत की और अनुवाद पेश किया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जब यह दावा है कि वह अल्लाह तआला की तरफ़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार इस ज़माना में इस्लाम के पुनर्जागरण के लिए भेजे गए हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आप के धर्म को दुनिया में फैलाने का काम अल्लाह तआला ने आपके सपुर्द किया है तो फिर ज़रूरी था और है कि अल्लाह तआला अपने समर्थन और सहायता के नज़्ज़ारे भी दिखाता। अत: अल्लाह तआला ने ये नज़्ज़ारे दिखाए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी अपने आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से कई बार इस बात की तसल्ली भी करवाई गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस ज़माना में जब इस्लाम विरोधी ताक़तें इस्लाम को ख़त्म करने के लगी हुई थीं आपने ऐलान फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने मुझे यह फ़रमाया है कि दुश्मन चाहे जितना ज़ोर लगा लें अब इस्लाम का फैलना फूलना और फलना अल्लाह ने मुक़द्दर किया हुआ है।

अल्लाह तआला का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह वादा आज भी स्थापित है और अपनी समस्त शान से पूरा होने वाला है जिस तरह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में था। और अब यह तरक़्क़ी जिस मसीह व महदी के द्वारा होनी है वह मैं ही हूँ और इस की वज़ाहत फ़रमाते हुए एक जगह आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह लोग अपने मुँह की बकवास से बकते हैं कि इस धर्म को कभी कामयाबी नहीं होगी। यह धर्म हमारे हाथ से तबाह हो जाएगा लेकिन ख़ुदा कभी इस धर्म को नष्ट करेगा और नहीं छोड़ेगा जब तक इस को पूरा न करे। फिर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह बुरा चाहने वालों की बुराई अपने मुँह की फूँकों से नूर अल्लाह को बुझाना चाहते हैं और अल्लाह अपने नूर को कामिल करने वाला है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम विरोधी ताक़तें तो अपने काम कर रही थीं लेकिन जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्द हैं उनसे भी यही पता लगता है कि इन लोगों की यह बदक़िस्मती है जो अपने आपको मुसलमान कहते हैं और फिर उनमें से बहुत से धर्म के आलिम भी कहते हैं। उन्होंने बजाय उस के कि काफ़िरों की इस कोशिश पर जो इस्लाम को मिटाने के लिए की जा रही थी या अब तक की जा रही हैं मसीह मौऊद का साथ दें आप अलैहिस्सलाम की विरोध शुरू कर दिया और करते चले जा रहे हैं लेकिन उनके विरोध अब कुछ नहीं कर सकते जिस तरह पहले ज़माने में विरोध कुछ नहीं कर सके या फिर एक हज़ार साल के अंधेरे ज़माने के बाद इस्लाम का विरोधी कुछ नहीं बिगाड़ सके और इस्लाम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सुरक्षित रहा। क़ुरआन करीम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अपनी असली हालत में रहा। इस तरह अब भी यह स्थापित रहना है और जिस तरह कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला का यह वादा है आपके ज़माने में और आपके द्वारा से धर्म का पुनर्जागरण और इस्लाम का जागरण होना है। अब इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा से ही दुनिया पर ज़ाहिर होनी है और हो भी रही है। जिस काम को अल्लाह तआला सम्पूर्ण करना चाहे इस में रोकें डालने की यह तथा कथित आलिमों या विरोधियों की कोशिशें कामयाब नहीं सकतीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: जो सईद फ़ितरत लोग इस भेद को इस राज़ को समझ रहे हैं वे अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आपके सिलसिला बैअत में शामिल होते जा रहे हैं। अत: उस ज़माना में ये राह जो ख़ुदा तआला तक ले जाए मसीह मौऊद के साथ जुड़ने से ही मिलती है। मैं कुछ घटनाएं वर्णन करूँगा जिस से पता चलेगा कि आपकी जमाअत में आने के लिए या शामिल हो कर किस तरह अल्लाह तआला ने मार्गदर्शन फ़रमाया है और किस तरह ईमानों को तरक़्क़ी देने के लिए निशान दिखाए हैं, किस तरह विरोधियों के सिर अल्लाह तआला ने नीचे किए है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला अपनी बात पूरी ने के लिए कि ये लोग इस नूर को मिटाना चाहते हैं लेकिन अल्लाह तआला उस की पूर्णता करेगा उसे पूरा करेगा और इस को कोई नहीं रोक सकता , किस तरह अल्लाह तआला इस बात को पूरी करने के लिए लोगों की राहनुमाई करता है। इस बारे में माली के एक दोस्त मुहम्मद कोने साहिब कहते हैं कि उन्होंने जमाअत के रेडियो को सुना और लोग जो जमाअत के ख़िलाफ़ बोलते हैं उनकी भी बातें सुनें। इसके बाद उन्होंने दुआ करनी शुरू कर दी कि अल्लाह तआला उन्हें सीधी राह दिखाए और इस के बाद उन्होंने ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग देखे जो कह रहे थे कि हर बंदा अहमदियत में आएगा चाहे अभी आए या बाद में। अत: उन्होंने बैअत कर ली और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़े फ़आल सदस्य हैं।

फिर तनज़ानिया के एक मुअल्लिम वर्णन करते हैं कि एक ख़ानदान में एक नेक फ़ितरत औरत सफ़ीरा साहिबा हैं, उनके पिता बचपन में फ़ौत हो गए थे। उनकी माता ने दूसरी शादी कर ली और उनके सौतेले पिता शराब बना कर बेचते थे औरया उनकी मदद भी किया करती थीं। उनका शराब की दूकान में निर्धारित हिस्सा भी था। एक दिन वह जमाअत के एक बुक स्टॉल के सामने से गुज़रीं तो उन्होंने जमाअत के किताबें देखकर कुछ सवाल किए और जमाअत अहमदिया के बारे में पूछा। जवाब मिलने पर उन्होंने कहा कि अगर इस्लाम यह है तो में तो बहुत भटकी हुई हूँ। मैं इस्लाम अहमदियत में दाख़िल होना चाहती हूँ। उन्हें बैअत फ़ार्म दिया गया ताकि घर जाकर इस पर ग़ौर करें। बैअत फ़ार्म पढ़ने के बाद अगले दिन ही शराब बनाने का सारा सामान उन्होंने अपने माता पिता के हवाले कर दिया और कहा कि अब इस काम से मेरा कुछ लेना देना नहीं है और ये सब कुछ आप ले लें। मैं असल इस्लाम में दाख़िल होना चाहती हूँ और इस तरह उन्होंने बैअत फ़ार्म भर कर के जमाअत में शामिल होने धारण की और दूसरे माध्यमों से उन्होंने अपना गुज़ारा करना शुरू किया।

सनेगाल से मुबल्लिग़ लिखते हैं कि टबगोरी एक गांव है। वहां की एक औरत मैमूना ने जब रेडियो से अहमदियत का पैग़ाम सुना तो बड़ी मुश्किल से मिशन हाऊस का पता कर के मिशन पहुंचीं और कहा कि मैं अहमदियत में दाख़िल होना चाहती हूँ। मेरा पति इस बात से ख़ुश नहीं है और न वह अहमदियत में दाख़िल होना चाहता है मगर मैंने अहमदियत को ही वास्तविक इस्लाम पाया है और मैं अपनी सारी औलाद के साथ अहमदियत में दाख़िल होती हूँ और साथ ही हर महीने अपना और अपने बच्चों का चन्दा देने का वादा किया और जमाअत में शामिल होने के दिन से हर महीने ख़ुद ही अपना और अपने बच्चों का भी चन्दा देती हैं और जो उनकी आर्थिक हालत है इस से बहुत बढ़कर हैं।

बेनिन बोहीको रीजन के लोकल मिशनरी कहते हैं कि एक रोज़ रेडियो तब्लीग़ के बाद एक साहिब आ जा फ़्रूं आगस्तीन साहिब का फ़ोन आया और कहने लगे कि मैं एक समय से जमाअत की तब्लीग़ सुन रहा हूँ और मैं मिलने का इच्छुक हूँ। अत: ख़ाकसार उनके घर चला गया। उन्होंने कुछ सवाल लिख रखे थे जिनके तसल्ली बख़श जवाब उनको दिए गए तो उन्होंने उसी वक़्त बैअत कर ली और जमाअत में दाख़िल हो गए। कहते हैं कुछ रोज़ के बाद में कुछ किताबें भी अपने साथ उन के लिए ले गया और यह किताबें पढ़ने के बाद मुझे दुबारा मिले और कहने लगे कि जमाअत की सच्चाई मुझ पर प्रकाशित की तरह मुझ स्पष्ट हो चुकी है और मैंने अपनी दिली ख़्वाहिश से यह वसीयत की है कि मेरे घर के सामने वाली ज़मीन जमाअत के लिए वक़्फ़ है और जमाअत जैसे चाहे उस ज़मीन का प्रयोग करे और बैअत के बाद उन्होंने इख़लास वफ़ा में बड़ी तरक़्क़ी की है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर हमारे मुबल्लिग़ कहते हैं अहमदाबाद इण्डिया में वहां बुक फेयर के अवसर पर एक

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

साहिब मुहम्मद सईद साहिब हमारे स्टॉल पराए। उनसे विचार विमर्श हुआ जमाअत के अक़ीदों के बारे में बातचीत हुई। बातचीत से मालूम होता था कि वह अहमदियत के बारे में काफ़ी इल्म रखते हैं। पूछने पर उन्होंने बताया कि किसी फ़र्द की तरफ़ से अहमदियत का पैग़ाम उनको नहीं लेकिन mta से लंबे अर्से से उनका परिचय था और mta पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहिमहुल्लाह के जो सवाल तथा जवाब की मज्लिसें थीं उनको सनु सुन के उनकी पूरी तसल्ली हो गई थी और कहते हैं कि मैं जमाअत अहमदिया को सच्चा स्वीकार करता हूँ और मेरे दिल में यह तड़प थी कि कभी कोई अहमदी मिले तो इस से मिल के जमाअत में शामिल हो जाऊं और बैअत कर के प्यारे आक़ा हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई को मानने वाला बन जाऊं अत: इस बुक फेयर के अवसर पर मुलाक़ात हो गई है और फिर उन्होंने मिशन हाऊस आकर बैअत कर ली और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इख़लास से इस भरे हैं।

इंडोनेशिया से मुबल्लिग़ मुहम्मद अहमद साहिब लिखते हैं कि सात महीने के अर्से में मेरी जमाअत में नई बैअत कोई नहीं हुई थी। रमज़ान का महीना था। इस मुबारक महीने में मैंने बहुत दुआएं कीं कि अल्लाह तआला मुझे कोई रास्ता दिखा दे जिसके द्वारा से यहां पर नई बैअत हो जाएगी। कहते हैं एक दिन मुझे याद आया कि चार महीने पहले किसी मुबल्लिग़ ने मुझे एक ग़ैर अहमदी दोस्त का फ़ोन नम्बर दिया था और बताया था कि वह जमाअत के बारे में कुछ मालूमात लेना चाहता है उनका घर मेरी जमाअत से क़रीब ही था। कहते हैं मैंने वट्सअप के द्वारा से उनसे सम्पर्क करने की कोशिश की लेकिन उनकी तरफ़ से कोई जवाब प्राप्त नहीं हुआ। कुछ दिनों के बाद उनकी तरफ़ से पैग़ाम आया और वट्सअप पर बातचीत का सिलसिला जारी हो गया। बातचीत के आख़िर पर उन्होंने मिशन हाऊस का पता पूछा और कुछ रोज़ के बाद वह मिशन हाऊस आए और बैअत के महत्तव और ज़माना के इमाम पर ईमान लाने की ज़रूरत और माली क़ुर्बानी इत्यादि के बारे में लम्बी बातचीत हुई। इन पर अहमदियत की सच्चाई स्पष्ट हुई और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उन्होंने इस साल जून में बैअत कर ली।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर मुबल्लिग़ इंचार्ज बेलीज़ लिखते हैं कि एक औरत ख़दीजा साहिबा ने बेलीज़ में सबसे पहले बैअत की थी और उनके द्वारा से बहुत से लोगों को अहमदियत का परिचय हुआ और कई लोग जमाअत में दाख़िल भी हुए। आजकल वह लजना की सैक्रेटरी तब्लीग़ के तौर पर सेवा अंजाम दे रही हैं। उनकी आदत है कि जहां भी जाती हैं लोगों को इस्लाम के बारे में बताती हैं। कहते हैं कि जनवरी 2019 ई में जलसा बेलीज़ से कुछ दिन पहले की घटना है कि वह गाड़ी ड्राईव कर के किसी मैंबर को पिक अप करने जा रही थीं कि उनका ग़लती से किसी दूसरी गाड़ी से ऐक्सिडन्ट हो गया और किसी घर के सामने वह गाड़ी पार्क हुई थी जिसको उनकी गाड़ी जाकर लग गई। गाड़ी की मालिका कार्ला साहिबा बाहर आएं तो ख़दीजा साहिबा ने कार्ला साहिबा से बहुत क्षमा की और कहा कि बेहतर है कि हम पुलिस को सूचना कर दें। उन्होंने कार्ला साहिबा को जमाअत का परिचय भी करवाया। जलसा बेलीज़ भी होने वाला था। इस दौरान में उन्होंने जलसा पर आने की दावत भी दी। कुछ दिन बाद कार्ला साहिबा जलसे पर आईं और जलसा के बाद बैअत कर के अहमदियत में शामिल हो गईं। जब उनसे पूछा गया कि वह जमाअत में क्यों शामिल हुई हैं तो उन्होंने बताया कि मैं कुछ समय से आप लोगों के बारे में मीडिया पर सुन रही थी और इच्छा रखती थी कि में भी तुम्हारे साथ मिल जाऊं लेकिन मैं किसी अहमदी को जानती नहीं थी लेकिन इस दिन जब ऐक्सिडन्ट हुआ तो ऐसा लगा कि ख़ुदा तआला तुम लोगों को ख़ुद मेरे पास ले आया है। जलसा में शामिल हो कर मुझे और अधिक तसल्ली हो गई कि यह मज़हब मेरे लिए है और मैंने बैअत कर ली। इस तरह ख़ुद अल्लाह तआला दरवाज़े खोलते है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अमीर साहिब गेम्बिया लिखते हैं कि अल्लाह के फ़ज़ल से हमें यहां कियाइंग सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट के योर विजूला गांव में एक ख़ूबसूरत मस्जिद तामीर करने की तौफ़ीक़ मिली। इस के बाद से गांव में मुल्ला आ रहे हैं और अहमदियों को धमकियां दे रहे हैं कि वे अहमदियत छोड़ दें और इस मस्जिद से अलग हो जाएं क्योंकि अहमदी ग़ैर मुस्लिम हैं और अगर उनमें से कोई फ़ौत हो गया तो उसे दफ़नाने नहीं दिया जाएगा। एक अनपढ़ अहमदी औरत ने मुलाओं से पूछा कि क्या अहमदी इस मस्जिद में अपनी नमाज़ों में क़ुरआन मजीद की सूरत फ़ातिहा नहीं पढ़ते ? अगर कोई फ़र्क़ नहीं है तो फिर हम क्यों अहमदियत को छोड़ें और क्यों अहमदियों की मस्जिद को छोड़ें। हम अहमदी हैं और अहमदी रहेंगे जो तुम ने करना है कर लो और इस तरह उनको दौड़ाया।

अमीर साहिब कांगो वर्णन करते हैं कि इस साल Bagata शहर में जमाअत के सैंटर स्थापित किया गया। जमाअत की संस्था और शिक्षाओं को देखते हुए प्राय मुसलमानों ने अहमदियत क़बूल कर ली जिसकी वजह से वहां जमाअत की बहुत विरोध शुरू हो गया और हमारे मुल्लेमीन को धमकियां दी जाती रहीं। इसी तरह हुकूमती संस्थाओं में भी झूठी रिपोर्टें की गईं। नौ मुबाईन को अहमदियत तर्क करने का कहा जा रहा है। अल्लाह के फ़ज़ल से इस विरोध के बावजूद सब साबित-क़दम हैं और वे इन विरोधियों को जवाब देते हैं कि हम सालों से मुसलमान थे , तुम लोग कभी हमारे पास नहीं आए। आज जब जमाअत अहमदिया हमें वास्तविक इस्लाम सिखा रही है तो तुमने विरोध शुरू कर दिया है। अब तो हम अहमदी मुसलमान हैं और इंशा अल्लाह इस पर स्थापित रहेंगे

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बेनिन में पारा को से मुबल्लिग़ लिखते हैं कि उनके रीजन के रहमान साहिब कहते हैं कि मैंने जब अहमदियत स्वीकार की तो मैं बहुत ग़रीब था। सिर्फ दो वक़्त की रोटी नसीब होती थी। मौलवियों ने बहुत विरोध किया मगर में अपने ख़ानदान के साथ अहमदियत पर स्थापित रहा। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत की वजह से ऐसी चन्दे की आदत पड़ी चाहे थोड़ा चाहे अधिक हर माह बाक़ायदगी से चन्दा देता हूँ। अब मेरे खेत पहले से अधिक पैदावार देते हैं और अब मेरे पास मोटर साईकल भी है और घर भी दृढ़ है। मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि अहमदियत की बरकतों की वजह से अल्लाह तआला ने मुझ पर फ़ज़ल फ़रमाए हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर विरोधियों के जो विरोध हैं उनके द्वारा बैअतें तो हर जगह ही नज़र आती हैं। एक दो और घटनाएं हैं। माली के रीजन को लेकोरोके एक गांव में अब्दुस्साल साहिब बताते हैं कि पहली बार उनको जमाअत का परिचय रेडियो से हुआ। तब वह किसी अहमदी के घर में थे। फिर उन्होंने अपना ज़ाती रेडियो ख़रीद और उस दिन से लेकर आज तक उन्होंने कभी जमाअत के रेडियो के अतिरिक्त कोई रेडियो नहीं सुना और कहा कि रेडियो के समस्त प्रोग्राम निहायत ध्यान से सुनते हैं ओर अपने घर वालों को सुनाते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उनके गांव में जमाअत काफ़ी मज़बूत हो चुकी है। पिछले साल गांव के इमाम ने दूसरे मौलवियों के कहने पर विरोध शुरू कर दिया और अहमदियों को मस्जिद में आने से रोक दिया। इस पर साथ ही गांव के एक अहमदी ने जिनका इस क़स्बे में प्लाट था फ़ौरी तौर पर जमाअत के नाम ये प्लाट कर दिया। इस पर जमाअत ने अपनी मदद आपके अधीन चारों तरफ दीवार बनाई और इस के खुले सेहन में नमाज़ें अदा करनी शुरू कर दी। इस विरोध के बाद गांव के चीफ़ और इलाक़े के मेयर और उनके नायबीन और क्षेत्र के 210 मर्दों ने अहमदियत क़बूल कर ली। मौलवी तो वहां विरोध करने के लिए आए थे लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल ऐसा हुआ कि इलाक़े के चीफ़ और मेयर ने भी अहमदियत स्वीकार कर ली और वहां इस साल जमाअत अपनी मस्जिद तामीर कर रही है और जो विरोध करने वाले थे इस मौलवी के पीछे उनमें से भी अल्लाह तआला के फज़ल से जमाअत में दाख़िल हो चुके हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर लाइबेरिया के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि तब्लीग़ी दौरे के दौरान कैप माउंट काओनटी के एक गांव Makandor पहुंचे और तब्लीग़ी प्रोग्राम आयोजित किया जिस में उनको जमाअत अहमदिया का परिचय , हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का परिचय और बिअसत का उद्देश्य बताया गई और सब सवालों के जवाब दिए गए। प्रोग्राम के समापन पर गांव के इमाम फ़वाद कुमारा साहिब ने बताया कि कुछ समय पहले यहां शीया फ़िर्क़ा के लोग आए थे जिन्होंने अहमदियों के ख़िलाफ़ झूठा प्रोपेगंडा किया कि ये लोग हैं जिन्होंने हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन को शहीद किया था। गांव के रहने वाले क्योंकि अनपढ़ होते हैं तो इस तरह मौलवी बेचारों को ग़लत तरीक़े से वरग़लाते हैं कि अहमदियों ने नऊज़ बिल्लाह इमाम हसन और इमाम हुसैन को शहीद किया था और हमें अहमदियों के ख़िलाफ़ किया है और अहमदियों से बदगुमान कर दिया था। लेकिन आज आप लोगों ने जमाअत अहमदिया का जो परिचय पेश किया है उसे सुनकर हम अफ़सोस करते हैं कि हम ने उनकी बात सुनी और ख़ुद को जमाअत से दूर रखा। लेकिन आज हम जमाअत अहमदिया से जुड़ने का ऐलान करते हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से गांव के लोगों , 195 मर्दों थे उन सब ने बैअत की और जमाअत में शामिल हो गए। तो यह मौलवियों के प्रापेगंडे का भी प्रभाव होता है। अल्लाह तआला उनकी जो चालें हैं किस तरह तोड़ता है, उन्हीं की चालें उन पर उल्टा देता है। अत: अल्लाह तआला ही है जो इस नूर को फैला रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :अत: हम सुदृढ़ प्रमाणों से इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि यह सिलसिला अल्लाह तआला का स्थापित किया हुआ है और इस नूर को फैलाने का ज़िम्मा अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने ज़िम्मा लिया है और वह फैला रहा है चाहे विरोधी जितनी भी कोशिश कर लें। अब कोई नहीं जो इस तरक़्क़ी को रोक सके। यह सिलसिला फलना है और फूलना है और फैलना है। इंशा अल्लाह। यह ख़ुदा तआला का अटल फ़ैसला है जो पूरा हो कर रहेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह अल्लाह तआला का एहसान है कि उसने हमें मसीह मौऊद को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है। अल्लाह तआला के फ़ज़लों को जज़ब करने के लिए हमारा यह भी काम है कि जहां हम अपनी हालतों की बेहतरी की तरफ़ ध्यान दें , अल्लाह तआला के इस फ़ैसले से फ़ैज़ पाने के लिए कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को ख़ुद दुनिया में फैलाएगा इस से फ़ैज़ पाने के लिए और इस से कुछ हिस्सादार बनने के लिए हम भी अपना हिस्सा डालें और वह इसी अवस्था में संभव है कि जब हम तब्लीग़ की तरफ़ भी कुछ ध्यान करें और इस से जहां हम अपनी दुनिया तथा परलोक संवारने वाले होंगे वहां दुनिया को भी सही रास्ता दिखाने वाले बन सकेंगे और अल्लाह तआला के फ़ज़लों को जज़ब करने वाले हूँ। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। अब दुआ कर लें

दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जलसा में हाज़रीन की संख्या के बारे में से फ़रमाया: अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह। रिपोर्टे के अनुसार हॉलैंड जमाअत के लोगों की कुल हाज़री 1576 है। इस में से 795 मर्द हैं और 781औरतें हैं। सामूहिक हाज़िरी 5839 है जिस में से 3495 मर्द और 2344 औरतें। ग़ैर अज़ जमाअत मेहमान132 हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उनकी रिपोर्ट के अनुसार 17 देशों के लोग यहां भी जलसा पर शामिल हुए। लगभग आधे से अधिक संख्या बाहर से आए मेहमानों की है और इस की वजह से उनका जलसा भी रौनक वाला हो गया। जज़ाकल्लाह। अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहो

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार इतफ़ाल अहमदिया हॉलैंड और ख़ुद्दामुल अहमदिया हॉलैंड ने बारी बारी उर्दू ज़बान में तराने पेश किए। इस के बाद बंगाली लोगों ने बंगला ज़बान में एक नज़्म पेश की। इस के बाद अरब लोगों पर आधारित ग्रुप ने अरबी ज़बान में अपना प्रोग्राम पेश किया। आख़िर पर अफ्रीकन लोगों पर आधारित ग्रुप ने अपने विशेष अंदाज़ में कलमा तय्यबा का विर्द किया और बड़े पुरजोश अंदाज़ में नारा तकबीर लगाए। इस के बाद 4 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

फ़ैमिली मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 29 फ़ैमिलीज़ के 127 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस के अतिरिक्त14 औरतों ने इन्फ़िरादी तौर पर और 113 जमाअत के लोंगो ने इन्फ़िरादी तौर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ और अहबाब हॉलैंड की जमाअतों Zwolle, Almere, Denbosh, ज़ोतरमीर, एम्सटर्डम ,Den Haag, Maastricht, Rotterdam ,Nunspeet ,Arnhem, Eindhoven, Utrecht, Amstelveen से आए थे

आज हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात करने वाले ये सभी वे लोग थे जो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से अपनी ज़िन्दगी में पहली बार मिल रहे थे। कुछ एक एक फ़ैमिलीज़ ऐसी थीं जिनके कुछ लोगों की पहली मुलाक़ात थी।

मुलाक़ात के बाद लोगों की प्रतिक्रियाएं

मुहम्मद बशीर कामिल साहिब जिनका सम्बन्ध झंग से है, उन्होंने अपने विचारों का ज़िक्र करते हुए कहा कि ख़ुदा तआला ने मेरी सब मुरादें पूरी कर दी हैं। महोदय ने बताया कि जब 2003 ई में ख़िलाफ़त ख़ामसा का चुनाव हो रहा था और रात देर हो चुकी थी तो मैंने पिता जी से कहा कि जूंही ऐलान हो मुझे उसी वक़्त जगा दें। अत: जब पिता जी जगाने आए तो मैंने पिता जी को बता दिया कि अभी मैंने ख़्वाब में देखा है कि मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह चुने गए हैं। अत: उस के कुछ देर बाद MTA पर ऐलान हो गया। महोदय ने बताया कि मैं अकेला बाहर आया हूँ। साल 2015 ई में हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हुई थी। तो मैंने बच्चों के लिए दुआ की दरख़ास्त की तो इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि "फ़िक्र न करें बच्चे आ जाऐंगे।' मैं मुलाक़ात करके दफ़्तर से बाहर निकला तो उसी वक़्त मेरे कैंप से मुझे फ़ोन आया कि आपके बच्चों के आने का लेटर आ गया है। किस शान से हुज़ूर अनवर की बात पूरी हुई। यह मेरे लिए एक मोजिज़ा से कम ना था। आज मेरे इन बच्चों और फ़ैमिली की भी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हो गई है। अल्लाह ने मेरी सब मुरादें पूरी कर दी हैं। आज तो हमारे लिए बहुत ख़ुशी का दिन है।

फैसलाबाद से आने वाले एक नौजवान रिज़वान महमूद साहिब ने कहा कि मेरी ज़िन्दगी की एक बहुत बड़ी इच्छा थी जो आज पूरी हो गई है। मुझे अपनी ज़िन्दगी में इस के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहिए। आज मुझे सब कुछ मिल गया है

एजाज़ महमूद चीमा साहिब जिनका सम्बन्ध नारंग मंडी से है, कहने लगे कि आज मेरा दिल बढ़ गया है। मैं बहुत ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ। मेरी ये मुलाक़ात मेरी ज़िन्दगी की सबसे क़ीमती चीज़ है

अन्जुम नवेद साहिब जो ख़ानेवाल से आए थे कहने लगे कि मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। भावनाओं का इज़हार करना बहुत मुश्किल है। मेरी एक पुरानी इच्छा पूरी हो गई। मेरी बरसों की दुआ ख़ुदा ने आज सुन ली और प्यारे आक़ा का दर्शन नसीब हो गया। इस का कोई दूसरा बदला नहीं है।

इफ़्तिख़ार अहमद साहिब जो ननकाना से आए थे, उन्होंने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा कि मैं अपने ख़ानदान का पहला पोता हूँ जिसने ख़लीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात की है। ख़ानदान में यह अवसर सिर्फ मुझे नसीब हुआ है। मेरे माँ बाप और सारे ख़ानदान वालों ने बहुत दुआएं की थीं कि मुझे यह सौभाग्य नसीब हो जाएगा। आज पाकिस्तान में मेरे सारे घर वालों की ख़ुशी की इंतिहा नहीं है।

फैसलाबाद से आने वाले नौजवान मुहम्मद यासर साहिब ने वर्णन किया कि आज मुझे बहुत अधिक ख़ुशी है। पाकिस्तान में MTA पर देखा करते थे और मैं दुआ किया करता था कि कभी मेरी ज़िन्दगी में भी प्यारे आक़ा का दर्शन नसीब हो। ख़ुदा ने आज मेरी दुआ सुन ली है। हुज़ूर अनवर ने मेरा हाथ पकड़े रखा और मैंने तस्वीर बनवाई।

उसमान अली साहिब जो गुजरांवाला से आए थे। जब उनसे उनके एहसासात के बारे में पूछा गया तो कहने लगे कि मेरा दिल धड़क रहा है। मेरा जिस्म काँप रहा है। मैंने हुज़ूर से बात करने की कोशिश की, मुझ से बात नहीं हो सकी। आज में बहुत ख़ुशनसीब हूँ।

कराची से आने वाले एक नौजवान उसमान अहमद साहिब ने कहा हमें अपने आक़ा से मिलने के लिए एक तड़प थी। आक़ा को देखने के लिए तरसते थे। अल्लाह तआला ने हमारी दुआएं सुन लें और आज मुलाक़ात की घड़ी नसीब हो गई। अल्लाह का करम है। ख़ुदा का शुक्र है। अल्लाह के फ़ज़ल के अतिरिक्त यह क्षण नसीब नहीं हो सकते। ख़ुदा हुज़ूर का साया हम पर हमेशा रखे। आमीन।

मुल्तान से आने वाले एक नौजवान अम्मार मुबश्शिर साहिब ने वर्णन किया कि इस वक़्त भावनाओं से मेरी यह हालत है कि शब्द मुँह से निकल नहीं रहे। ज़िन्दगी में पहली बार ख़लीफ़ा वक़्त को क़रीब से देखा है। मुझ से बोला नहीं जा रहा था। मैंने बड़ी मुश्किल से माता पिता के लिए दुआ के लिए कहा।

नबील अहमद साहिब अलीपुर चठ्ठा ज़िला गुजरांवाला से आए थे, कहने लगे कि मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। हुज़ूर से मुलाक़ात मेरा एक ख़वाब था और मुझे अब भी यक़ीन नहीं आ रहा कि यह पूरा हो गया है और मुझे हुज़ूर से मुलाक़ात की नेअमत नसीब हो गई है। ये ख़ुदा तआला का ऐसा ख़ास फ़ज़ल है कि मैं उम्र-भर उसका शुक्र अदा नहीं करसकता। ख़ुदा तआला हुज़ूर का साया हम पर सलामत रखे और हमें हुज़ूर की हर हिदायत पर अमल की बख़्शे।

रब्वह से आने वाले एक नौजवान मुहसिन रज़ा साहिब कहने लगे कि मुझ से बोला नहीं जा रहा। आज ज़िन्दगी की सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई है। मेरे दिल की धड़कन उस वक़्त तेज़ है। मुझे यक़ीन नहीं आ रहा कि आज मेरी मुलाक़ात हो गई है। मुलाक़ात ने मुझे बदल कर रख दिया है

ख़ुर्रम शहज़ाद साहिब जो कि रब्वह से आए थे कहने लगे कि हम MTA पर जलसे देखते थे जिन में हुज़ूर अनवर सम्मिलित होते थे। मेरी बहुत इच्छा थी कि इन जलसों में शामिल हूँ। हुज़ूर अनवर का दर्शन करें और मुलाक़ात भी नसीब हो। ख़ुदा ने अपने फ़ज़लों से आज वह दिन दिखाया है और मेरे पास शब्द नहीं कि अपनी ख़ुशी का इज़हार कर सकूं। जलसा में भी शामिल हुआ और आज मुलाक़ात की घड़ी भी नसीब हो गई। यह ख़ुदा का इतना बड़ा इनाम है कि इस से बड़ी नेअमत कोई भी नहीं है।

एक नौजवान मसऊद अमजद शहज़ाद साहिब सरदार वाला ज़िला सरगोधा से आए थे, कहने लगे कि जो मेरी कैफ़ीयत है एक इन्सान उसे वर्णन नहीं कर सकता।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 7 May 2020 Issue No.19

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मेरी हुज़ूर अनवर से मिलने की बहुत इच्छा थी और मैं हुज़ूर अनवर को ख़त लिखा करता था कि मेरे लिए दुआ करें कि मेरी ज़िन्दगी में एक दिन ऐसा आ जाए जब हुज़ूर अनवर के हाथों को छू सकूं। दुआ क़बूल हो गई। मैं आज दुनिया का ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ कि ख़लीफ़ा ने मेरे हाथ को पकड़ा है और मैंने हुज़ूर से बात की है और तस्वीर भी ली है।

ननकाना से एक नौजवान बाबर इक़रार साहिब आए थे। कहने लगे कि मैं बता नहीं सकता कि मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की कितनी बहुत इच्छा थी। मैं जलसा जर्मनी पर इसलिए गया था कि वहां हुज़ूर अनवर के चेहरे का दर्शन करूँगा। जब हुज़ूर अनवर का चेहरा नज़र आया तो मेरे मुँह से अपने आप माशा अल्लाह निकला। आज अल्लाह तआला ने मुलाक़ात की इच्छा पूरी फ़र्मा दी। मैंने इंतिहाई क़रीब से प्यारे आक़ा का दर्शन किया। मैं आज कितना ख़ुशनसीब हूँ

ख़ालिद अहमद चठ्ठा साहिब नुसरत आबाद फ़ार्म मीरपुर ख़ास सिंध से आए थे कहने लगे कि आज मेरे दिल को सुकून मिला है। पाकिस्तान के जिस क्षेत्र से मैं हूँ वहां से किसी आम आदमी का आना बहुत मुश्किल है। मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की बहुत इच्छा थी। हम MTA पर देखा करते थे। ख़ुदा तआला ने बहुत मुश्किलों के बावजूद यहां आने के सामान बनाए और आज मेरी इच्छा पूरी हो गई है। मैं इस का शुक्र अदा नहीं कर सकता।

डाक्टर क़ैसर ख़ुर्रम साहिब चैनयूट से आए थे। कहने लगे कि मैंने 2003 ई में बैअत की थी। बाद में मेरी माता ने भी बैअत कर ली और फिर बीवी ने भी कर ली। आज मैं इंतिहाई ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ कि मुझे हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का अवसर मिला। मैंने ज़िन्दगी में पहली बार हुज़ूर को इंतिहाई क़रीब से देखा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या बात करूँ। बस यही बात की कि पिता साहिब की हिदायत के लिए दुआ करें कि वे भी अहमदी हो जाएं। मुलाक़ात के बाद में महसूस कर रहा था कि मैं अंदर से साफ़ हो गया हूँ। रूई की तरह हल्का हो गया हूँ और बिलकुल बदल गया हूँ। एक मिनट से भी कम वक़्त था लेकिन इस लम्हा ने मुझे बदल कर रख दिया है। मेरे ख़ुदा ने मुझे सब कुछ दिया।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 8 बजकर10 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। नमाज़ मग़रिब तथा इशा की अदायगी का इंतिज़ाम बैयतुन्नूर से साथ की मार्की (औरतों के जलसा गाह) में किया गया था जबकि बैयतुन्नूर में औरतों नमाज़ के लिए जमा थीं।

तक़रीब

आज बच्चियों की आमीन का प्रोग्राम भी था जो बैयतुन्नूर में औरतों के हिस्सा में ही हुई। प्रोग्राम के अनुसार साढ़े आठ बजे हुज़ूर अनवर बैयतुन्नूर में तशरीफ़ लाए और तक़रीब आमीन शुरू हुई। निम्नलिखित 30 बच्चियां इस तक़रीब में शामिल हुईं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बारी बारी हर एक से एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई। बच्चीयों के नाम दर्ज हैं:

प्रिया वरदा काशिफ़, मेहवश नोमाना आरिफ़, मनसा अज़हर मुमताज़, मारिया नसीर, सेहर राना, सानिया सिद्दीक़ी, काशफ़तुन्नूर महबूब, अनीसा इमरान चौधरी, फ़ातिहा आमिर, अनायह अली, नाजिया असलम, दानिया अहमद जट, ईशाह सुलतान, अतयतुल बासित, नमूदे सह्र महमूद, Noer हया मन्नान, अदीला फ़ारूक़, हिबतुल बसीर मलिक, आसिफ़ा मलिक, ताहिरा El Hadouchi मह नूर अकमल, सिबग़तुल मुकीत, मनाहल मंसूर, Saniha नसीर, Anosh Sakhi दरेशाह अन्जुम, उरूज मीर, आरिफ़ा मुबश्शिर आरिफ़, जाज़िबा कमाल क़ाज़ी, अतयतुल सुबोह

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मार्की मैं तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

रमज़ानुल मुबारक के पवित्र महीना साथ तहरीक जदीद की गहरी समानताएं

तहरीक जदीद के संस्थापक सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो रमज़ानुल मुबारक के साथ तहरीक जदीद की गहरी समानताओं पर रोशनी डालते हुए फ़रमाते हैं

"…..अगर तुम रमज़ान से फ़ायदा उठाना चाहते हो तो तहरीक जदीद पर अनुकरण करो और अगर तहरीक जदीद को फ़ायदा पहुंचाना चाहते हो तो रोज़ों से उचित फ़ायदा उठाओ तहरीक जदीद यही है कि सादा ज़िन्दगी व्यतीत करो और मेहनत और कठोरता और क़ुर्बानी का अपने आपको आदी बनाओ यही शिक्षा रमज़ान तुम्हें सिखाने के लिए आता है। अत: जिस उद्देश्य के लिए रमज़ान आया है इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कोशिश करो …हर व्यक्ति को कोशिश करनी चाहिए कि इस का रमज़ान तहरीक जदीद वाला हो और तहरीक जदीद रमज़ान वाली हो। रमज़ान हमारे नफ़्स को मारने वाला हो और तहरीक जदीद हमारी रूह को ताज़गी प्रदान करने वाली हो। अत: जब मैंने कहा कि रमज़ान से फ़ायदा उठाओ तो दरअसल मैंने तुम्हें समझाया है कि तुम तहरीक जदीद के उद्देश्यों को रमज़ान की रोशनी में समझो। और जब मैंने कहा है कि तहरीक जदीद की तरफ़ ध्यान करो तो दूसरे शब्दों में मैंने तुम्हें यह कहा है कि तुम हर हालत में रमज़ान की कैफ़ीयत अपने ऊपर ओढ़े रखो। और मैं क़ुर्बानी और निरन्तर क़ुर्बानी की अपने अंदर आदत डालो। जो रमज़ान बिना सच्ची क़ुर्बानी के गुज़र जाता है वह रमज़ान नहीं और जो तहरीक जदीद बग़ैर रूह की ताज़गी के गुज़र जाती है वह तहरीक जदीद नहीं।"

(ख़ुत्बा जुमअ: 4 नवम्बर 1938 ई)

इसी अन्तर्गत में हुज़ूर रज़ी अल्लाह अन्हो ने 11 नवम्बर 1938 ई को अपने ख़ुत्बा जुम्अ: के अन्त में जमाअत को चंदा तहरीक जदीद देने वालों के लिए विशेष रूप से दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया

"रमज़ान का जो आख़री अशरा (अन्तिम दस) दिन आने वाला है इस को तहरीक जदीद के बारे में पिछली क़ुर्बानियों के लिए शुक्रिया और भविष्य के लिए ताक़त को प्राप्त करने के लिए ख़र्च करो। जिन को पिछले सालों में क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ मिली है वे उस के लिए अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करें। और हर एक दुआ करने वाला अल्लाह तआला से हर क़ुर्बानी करने वाले के लिए दुआ करे कि उसने धर्म की महानता और सिलसिला की मज़बूती के लिए जो क़ुर्बानी की है इस के नतीजा में अल्लाह तआला इस पर अपने फ़ज़ल और रहमतें नाज़िल करे। और इस के लिए अपनी मुहब्बत और बरकतों का नुज़ूल फ़रमाए। इसी मुहब्बत और इख़लास के अनुसार जिसके साथ उसने ख़ुदा की राह में क़ुर्बानी की थी। आमीन

(अलफ़ज़ल 15 नवम्बर 1938 ई पृष्ठ नम्बर 4)

दैनिक अलफ़ज़ल कादियान 29 नवम्बर 1938 ई में प्रकाशित ऐलान के अनुसार जमाअत के मुख़लेसीन की शुरू से यह आदत रहा है कि वह हमेशा माह रमज़ान के मध्य तक अपने चंदे तहरीक जदीद के वादों की शत प्रतिशत अदायगी कर के अल्लाह तआला के फज़लों तथा बरकतों को जज़ब करने की कोशिश करते हैं। अत: अब जब कि हम अल्लाह तआला की दी हुई तौफ़ीक़ से एक-बार फिर बेशुमार आसमानी रहमतों और बरकतों वाले इस पवित्र महीने में क़दम रखने वाले हैं। तहरीक जदीद से सहायता करने वालों से निवेदन है कि वे अपनी शानदार रिवायात को बरक़रार रखते हुए 20 रमज़ानुल मुबारक अर्थात 14 मई तक अपने चन्दों की मुकम्मल अदायगी कर के हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मक़बूल दुआओं से भरपूर हिस्सा पाने की सआदत हासिल करें। अल्लाह तआला हम सबको इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

(वकीलुल माल तहरीक जदीद कादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad